कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

रत्नागिरी प्रतिभा

विभागीय ई-पत्रिका - 2023 **अंक-07**

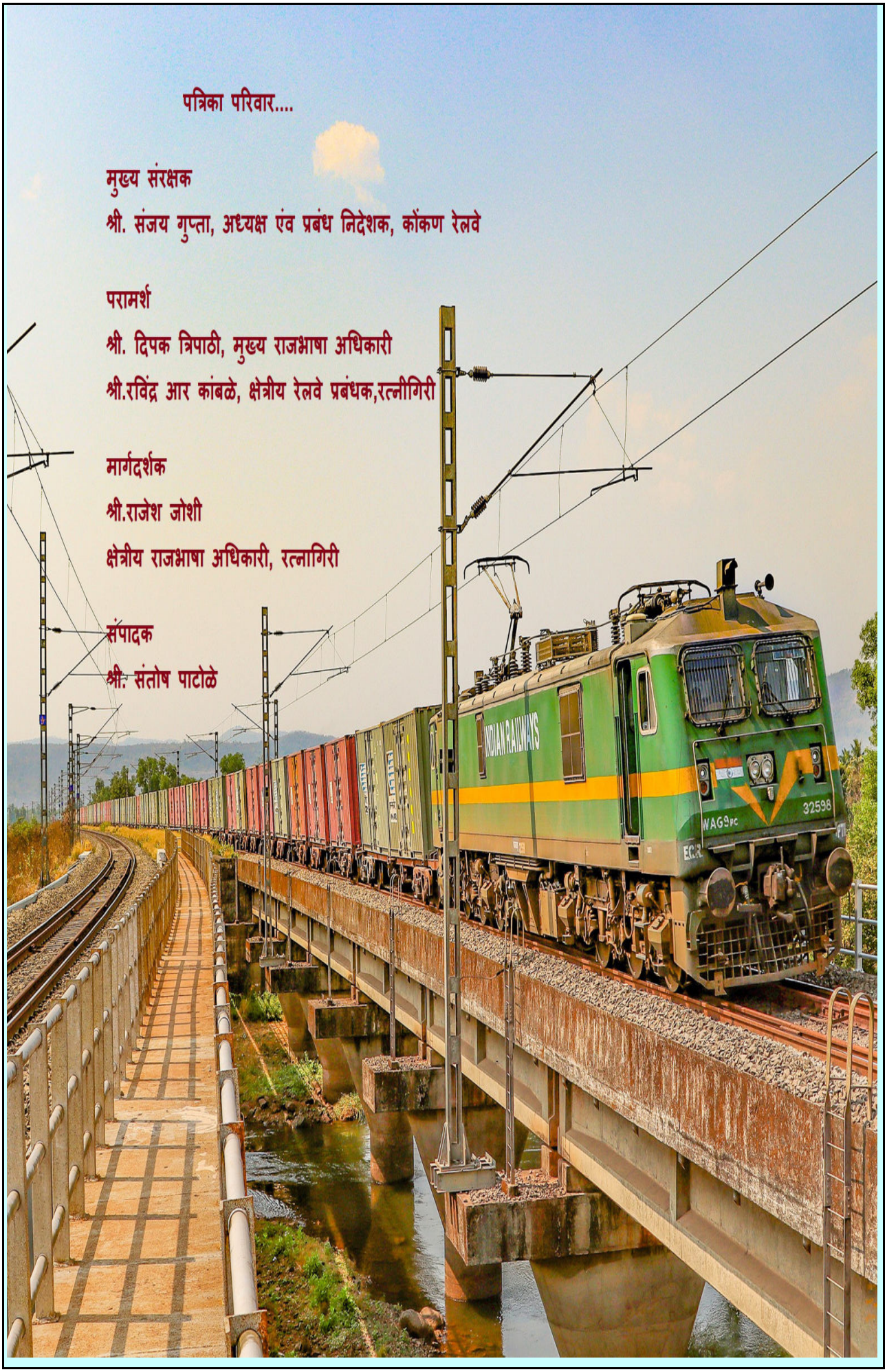

पत्रिका परिवार....

मुख्य संरक्षक

श्री. संजय गुप्ता, अध्यक्ष एंव प्रबंध निदेशक, कोंकण रेलवे

परामर्श

श्री. दिपक त्रिपाठी, मुख्य राजभाषा अधिकारी

श्री.रविंद्र आर कांबळे, क्षेत्रीय रेलवे प्रबंधक,रत्नीगिरी

मार्गदर्शक

श्री.राजेश जोशी

क्षेत्रीय राजभाषा अधिकारी, रत्नागिरी

संपादक

श्री. संतोष पाटोळे

अंतरंग

1. राजभाषा गीत
2. केंद्र सरकार के कार्यालय में राजभाषा के प्रयोग
3. समय का सफर
4. साइबर सुरक्षा (cyber security)
5. हिंदी की उत्पत्ति और विकास
6. ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली समस्या एवं समाधान
7. महिलाओं के लिए सायबर सुरक्षा
8. इंटरनेट बना "सच्चा साथी"
9. वाचन संस्कृति
10. कागज की कश्तिया...
11. रेल गाड़ियों के परिचालन में लोको पायलट और ट्रैन मैनेजर की भूमिका
12. जीवन में सफलता का रहस्य
13. ऑनलाईन कारोबार

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक जी का संदेश...

किसी भी देश की मौलिक सोच सृजनात्मक अभिव्यक्ति केवल अपनी भाषा में ही संभव है। अपनी भाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्र को मजबूत बनाता है। अपनी भाषा में मौलिक लेखन से अभिव्यक्ति सरल, सहज और स्वाभाविक होती है और ऐसा अनुवादित भाषा के माध्यम से संभव नहीं है, इसलिए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अनुवाद के बजाय मूल रुप से हिंदी में कार्य करना आवश्यक है। संपूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोकर हिंदी ने अनेकता में एकता की भावना को आम जनता में निरंतर बनाए रखा है।

साथियो, कोंकण रेलवे के रत्नागिरी क्षेत्र की ई-हिंदी पत्रिका "रत्नागिरी प्रतिभा" अंक-07 में जिन कर्मियों ने अपने लेख के माध्यम से विभिन्न विषयों की विशेषताओं को पाठकों के समक्ष प्रदर्शित किया है, उन सभी का मैं अभिनंदन करता हूं। साथ ही इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं संपादक मंडल को बधाई देता हूं।

संजय गुप्ता
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

क्षेत्रीय रेलवे प्रबंधक की कलम से.....

यह हर्ष का विषय है कि रत्नागिरी क्षेत्र की स्वतंत्र हिंदी ई पत्रिका "रत्नागिरी प्रतिभा" के 7 वे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी भारत की राजभाषा के साथ-साथ हर भारतीय के हृदय की भाषा भी है,अतः हम सभी का यह संवैधानिक कर्तव्य बनता है कि हम अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करे राजभाषा के प्रचार-प्रसार में गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन महत्वपूर्ण कार्य है। इनमें से सभी सदस्य कार्यालय कर्मियों को अपनी रचनात्मक क्षमता प्रकट करने का एक सशक्त मंच प्राप्त होता है।कोंकण रेलवे का रत्नागिरी क्षेत्र इस दायित्व का निर्वहन कर रहा है।

राजभाषा विभाग, रत्नागिरी द्वारा हिंदी ई पत्रिका "रत्नागिरी प्रतिभा" का प्रकाशन सराहनीय प्रयास है।मैं "रत्नागिरी प्रतिभा"ई पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

- रविंद्र आर कांबळे
क्षेत्रीय रेलवे प्रबंधक,रत्नागिरी

राजभाषा गीत

संस्कृत की एक लाड़ली बेटी है ये हिन्दी।
बहनों को साथ लेकर चलती है ये हिन्दी।

सुंदर है, मनोरम है, मीठी है, सरल है,
ओजस्विनी है और अनूठी है ये हिन्दी।

पाथेय है, प्रवास में, परिचय का सूत्र है,
मैत्री को जोड़ने की सांकल है ये हिन्दी ।

पढ़ने व पढ़ाने में सहज है, ये सुगम है,
साहित्य का असीम सागर है ये हिन्दी ।

तुलसी, कबीर, मीरा ने इसमें ही लिखा है,
कवि सूर के सागर की गागर है ये हिन्दी।

बागेश्वरी का माथे पर वरदहस्त है.
निश्चय ही वंदनीय मां-सम है ये हिंदी।

अंग्रेजी से भी इसका कोई और नहीं है.
उसको भी अपनेपन से लुभाती है ये हिन्दी।

यूं तो देश में कई भाषाएं और हैं,
पर राष्ट्र के माथे की बिंदी है ये हिन्दी।

----*****--------

केंद्र सरकार के कार्यालय मे राजभाषा के प्रयोग।

सहज सरल सुंदर और अनुपम हिंदी का यह रूप है।
मान सिखाती ज्ञान बढ़ाती हिंदी मातृ स्वरूप है ।
छोटे बड़े का आदर करती हिंदी ऐसी भाषा है।
देश का गौरव देश की शान ये देश की राजभाषा है।
हिंदी को उसका मान मिले यही सबकी आशा है।
हिंदी दृढ़ हो यह हिन्दुस्तान के जन मन की अभिलाषा है।

प्रस्तावना हिंदी के सम्मान में जितना भी लिखा जाये वह कम ही माना जायेगा। मां की लोरियों से लेकर पिता की घुड़कियों तक, दादी नानी की कहानियों से लेकर चाचा मामा की समझाइश तक, भाई बहन की तकरार से लेकर दोस्तों की अठखेलियों तक, हिंदी का हमारे जीवन के हर क्षण में एक अलग ही स्थान है। हमारे हर रिश्ते में हिंदी का स्वाद ऐसे घुल मिल गया है जैसे खाने में नमक पुल मिल जाता है। जिस प्रकार हमारे रोज के खाने में नमक की मौजूदगी से खाने का स्वाद मिलता है और काम या ना होने पर भोजन बेस्वाद लगता है, ठीक उसी प्रकार हमारे जन जीवन में हिंदी की प्रासंगिकता से जीवन में नवरस आता है और न होने पर जीवन नीरस हो जाता है। राजभाषा हिंदी हमारे देश में प्रयोग की जाने वाली सर्वप्रमुख भाषाओं में सम्मिलित की गई है। हिंदी अपने आप में एक संपूर्ण, सहज, एवं सरस भाषा है। इसे लिखना, बोलना एवं समझना अत्यंत सरल है। हिंदी साहित्य का इतिहास बहुत ही गौरवशाली रहा है और न केवल हिंदी भाषी देशों बल्कि हिंदीतर भाषी देशों में भी इसे खुले दिल से अपनाया गया है। हिंदी की रंग बिरंगी शब्दावली और वैज्ञानिक व्याकरण शैली इसे दूसरी जटिल भाषाओं से अलग और रुचिकर बनाती है।

प्राचीन काल से ही राजभाषा हिंदी को लिखने, पढ़ने और समझने वाले इसे सिर आंखों पर रखते हैं। एक तरफ हिंदी साहित्य की गहराई नापना अत्यंत दुष्कर है (चाहे वह गद्य हो या पद्य) तो दूसरी तरफ इसकी गहराई में जो गया यह समझो पार लग गया। संत कबीर जी का निम्नलिखित दोहा हिन्दी के अथाह भंडार और असीमित संभावनाओं को दर्शाने के लिए अवश्य ही उपयुक्त है।

जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पठ |
मैं बपुरा बूडन डरा रहा किनारे बैठ ।

अर्थात हिंदी को कोई जितना समझेगा वो उतना ही और जानने के लिए लालायित होगा और जो हिंदी भाषा का दूर से और ऊपर ऊपर से सतही आनंद लेगा यह उसके महात्म्य और गहराई को कभी भी नहीं समझ पाएगा।

राजभाषा हिंदी के लिए चुनौतियां.....

इतनी सारी विशेषताओं के बावजूद भी हमारी राजभाषा हिंदी अपने यथोचित स्थान और मान पाने के लिए संघर्षशील है। यह एक विडंबना ही है कि जिस देश का नाम हिंदुस्तान है, उसी देश में हिंदी का प्रयोग करने वालों को पिछड़ा और हीन माना जाता है। भारत जैसा महान देश जिसका जनसंख्या में दूसरा स्थान है, जिसका अर्थव्यवस्था में पांचवा स्थान है, और जिसकी राजभाषा हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। ऐसे देश में हिंदी को ळी अभी तक बुनियादी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। एक ओर जहां विज्ञान, प्रौद्योगिकी, उद्यम, नवाचार एवं तकनीक के क्षेत्र में हम अत्यंत तीव्र गति से प्रगति कर रहे हैं. वहीं आधुनिक शिक्षा, व्यवसाय, कृषि, आदि कई क्षेत्रों में नित नई समस्याओं का सामना भी करना पह पहा है। इन समस्याओं में एक समस्या भाषा संबंधी भी है जिसमें अनेक विरोधाभास देखे जा सकते है। संचार के माध्यम रहन सहन के तरीके जितने आधुनिक होते जा रहे हैं, भाषा की शुद्धता मानो उतनी ही कम होती जा रही है। वैधीकरण का प्रभाव हमारे देश के हर कोने में देखने को मिल रहा है रहन सहन, पहनावा, बोलचाल एवं संस्कार सभी में आजकल आधुनिकता की छाप देखने को मिल जायेगी। मुख्य रूप से बच्चे और युवा वर्ग इससे अधिक प्रभावित होता हुआ दिखाई दे रहा है।

शिक्षण एवं पठन पाठन आधुनिक होने के कारण युवा वर्ग को कार्यशैली भी वैसी ही बनती जा रही है। युवाओं का रोजगार, व्यवसाय, निजी क्षेत्र के कार्यालय इससे सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। जहां हर छोटी से लेकर यही बात आधुनिकरण के चपेट में आ गई है। सरकारी कार्यालय भी इससे अछूते नहीं है। पत्र व्यवहार से लेकर प्रचार प्रसार की सारी सामग्री मुख्यतया आधुनिक एवं अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में ही तैयार हो रही है। इसका एक मुख्य कारण ये है कि कर्मचारी वर्ग अपने आप को समय के साथ बदलना चाहता है और आधुनिक कहलाना चाहता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि देश को उन्नति पहुंमुखी विकास, प्रगति और बाकी देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए आधुनिकरण और भूमंडलीकरण का सहारा लेना ही पड़ेगा किंतु इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि कहीं ये शैली हमारी अपनी भाषा हिंदी के अनुप्रयोग में बाधा न बन जाए।

कोस कोस पर बदले पानी चार कोस पर बानी।

उपर्युक्त पंक्तियां हमारे देश की रंग बिरंगी संस्कृति और भाषागत विविधता को बहुत ही सटीक ढंग से दर्शाती है। हमारा देश एक ऐसा देश है जहां के लोगों भाषा में उनके प्रांत लोकाचार, परंपराओं, रीतियों, और प्रचलन का प्रभाव देखने को मिलता है। ऐसे में सरकारी उपक्रम वाले विभाग दैनिक काम काम के हर क्षेत्र में चुनौती का सामना करते हैं। बोली का प्रभाव दिखता है तो कहीं कहीं हिंदी प्रांतवाद या भाषावाद के का माध्यम कोई और भाषा होने के कारण यहां के लोग चाह कर भी हिंदी भाषा का प्रयोग कार्यालयीन गतिविधियों के लिए नहीं कर पाते। कहीं लोगों की बोली में स्थानीय भाषा एवं लोग हिंदी के व्यापक प्रयोग से अनभिज्ञ है। घपेट में आ गई है तो कुछ क्षेत्रों में शिक्षा राजभाषा समिति का अथक प्रयास-1976 में गठित की गई संसदीय राजभाषा समिति एक ऐसी समिति है जिसे राजभाषा के क्षेत्र में सर्वोध अधिकार प्राप्त है। सभी सरकारी उपक्रमों में कार्यालयीन गतिविधियों के कार्य हिंदी में सुचारु रूप से हो, इस बात का ध्यान ये समिति रखती है। समय समय पर सभी विभाग अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले उप विभागों को राजभाषा में कार्य करने के लिए प्रेरित और निर्देशित करते रहते हैं। यह आज के परिपेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए आवश्यक भी जान पड़ता है। क्योंकि यदि कोई विभाग निगरानी नहीं रखेगा तो कोई नियमों को मानेगा भी नहीं कुल मिलाकर संसदीय राजभाषा समिति और सभी केन्द्र सरकारी उपक्रम जी जान से हिंदी का उद्धार करने में लगे हुए हैं। आज के परिप्रेक्ष्य में यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। केन्द्र सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी: समस्या एवं समाधान समस्या केंद्र सरकार के सभी उपक्रमों एवं विभागों का राजभाषा के उत्थान के लिए किया जाने वाला अथक प्रयास भाषा उत्थान की इस कड़ी धूप में ठंडी छांद सा तीत होता है। संसदीय राजभाषा समिति की अनुशंसा पर आजकल केंद्रीय

कार्यालयों में पत्र व्यवहार, प्रतिलिपि, हस्ताक्षर, सूचना, विद्युत संचार माध्यम से जुड़े कार्य, प्रचार प्रसार और कार्यालय के अंतर्गत होने वाला सारा कार्य मुख्यतया हिंदी में हो रहा है ये ध्यान दिया जा रहा है कि राजभाषा को यथोचित स्थान और सम्मान दिया जाए। हर विशेष अवसर और विशेष दिवसों पर हिन्दी का समुचित प्रचार प्रसार भी किया जा रहा है। कार्यालयों में हिंदी पखवाड़ा, हिंदी दिवस और हिंदी सप्ताह मनाने का विशेष रूप से ध्यान रखा जा रहा है। कुल मिलाकर केंद्र सरकारी कार्यालयों में राजभाषा उत्थान हेतु अथक प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए सारा श्रेय उन लोगों और कर्मचारियों को जाता है जो सहज रूप से हिंदी का प्रयोग करते आ रहे है और इसका प्रयोग करने में कोई कोताही नहीं बरतते हैं। जो कर्मचारी राजभाषा के प्रयोग में अपना सम्मान समझते हैं ये निस्संदेह प्रशंसा के पात्र है। वैसे भी अपनी राजभाषा के प्रयोग में कोई हीन भावना नहीं आनी चाहिए, बल्कि हमारा सिर गर्व से ऊंचा होना चाहिए। कई केंद्र सरकारी कार्यालय राजभाषा के अधिक से अधिक प्रयोग को लेकर कई गतिविधियां कराई जा रही है समाधान हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए केंद्र सरकारी उपक्रम जो प्रयास कर रहे हैं, वे निस्संदेह प्रशंसा के पात्र हैं। हालांकि कुछ क्षेत्रों में हमें यह ध्यान रखना होगा कि इसे और बेहतर कैसे बनाया जाए। जिन विभागों में द्विभाषी कार्यशैली और कार्य पद्धति अपनाई जाती हैए उन विभागों में मूलतया हिंदी को ही प्रमुख भाषा का दर्जा दिया जाना चाहिए। पत्र व्यवहार के लिए कार्यालयों से संपर्क करने वाले नागरिकों को हिंदी के प्रयोग के लिए सकारात्मक रूप से प्रेरित किया जाना चाहिए। विद्युत संचार माध्यम से जुड़े सारे कार्य जैसे की वेब साइट, ऑनलाइन सूचना, घोषणा पत्र इत्यादि, मुख्य रूप से हिंदी में ही होने चाहिए। समय समय पर कार्यालय रोचक प्रतियोगिताएं करवा सकते हैं जिसमें वर्षोंए युवाओं, प्रौढ़ वर्ग और वरिष्ठ नागरिकों के लिए उनकी आयु और अभिरुचि के अनुसार ज्ञानवर्धक गतिविधियां करवाई जाएं। हिंदी में हस्ताक्षर के नियम लाए जा सकते हैं। कार्यालय क्षेत्र में जो भी बैनर लगाए जाएं, वे सब हिंदी में हो दिशा निर्देशऔर संकेत हिंदी में दिए जाएं। कॉल सेंटर पर फोन द्वारा संपर्क साधने हेतु जो भी प्रक्रिया हो उसमें भी हिंदी को ही प्राथमिकता दी जानी चाहिए। राजभाषा के अनुप्रयोग में केवल संख्यात्मक ही नहीं बल्कि गुणात्मक सुधार की भी आवश्यकता है। इस हेतु कार्यालयों को हिंदी व्याकरण और शब्दों की शुद्धता पर विशेष ध्यान देना होगा। बोलते समय भी राजभाषा की गरिमा बनी रहे ऐसी ही सुसंस्कृत भाषा का प्रयोग किया जाए।

अनावश्यक रूप से अनुचित भाषा का प्रयोग करने से बचना चाहिए। ऐसा कुछ भी न बोला जाए जिससे कि अर्थ का अनर्थ हो जाए। गलती या त्रुटि होने पर सुधार किया जाए। समय समय पर स्व आकलन किया जाए। हर माह यह नियमानुसार हो तो स्थिति में सकारात्मक बदलाव आना संभव है। भाषा से संबंधित जो भी त्रुटियां हो रही हैं उन्हें स्व मूल्यांकन करके सुधारा जा सकता है। राजभाषा की गरिमा को बनाए रखना बहुत आवश्यक है। ऐसी किसी भी बात को रोका जाये जो व्याकरण सम्मत या नीति सम्मत न हो। जिससे की न तो कोई कर्मचारी और न ही कोई विभाग जनता के रोष और हंसी के पात्र बने। राजभाषा के प्रयोग में होने वाली जटिलताओं को कम किया जाना चाहिए। जहां तक संभव हो सरल और सहज हिंदी के प्रयोग पर जोर दिया जाना चाहिए। जो कर्मचारी अनवरत रूप से हिंदी का अनुप्रयोग में नवाचार करते हैं और निष्ठा से हिंदी का उपयोग बोलने, लिखने और अन्य कार्यों में करते हैं, उन्हें अवश्य ही यथोचित पुरस्कार देकर प्रोत्साहित एवं सम्मानित किया जाना चाहिए। विभागीय स्तर पर प्रतियोगिताएं संचालित को जानी चाहिए जिससे लोगों में हिंदी सीखने का जज्बा आए। समय समय पर पाक्षिक, मासिक एवं वार्षिक पत्रिकाएं प्रकाशित कर लेखकों और कवियों को मंच प्रदान किया जाना चाहिए। इससे उनके अंदर हिंदी का मान स्वतः ही बढ़ेगा।

अंततः यदि भारतीय लोक व्यवस्था में समस्याएं हैं तो उनके समाधान भी हम भारतीयों के पास ही हैं। हिंदी का सही, सटीक और संतुलित प्रयोग करने करवाने के लिए प्रत्येक देशवासी को अपना योगदान करना होगायह योगदान तन, मन, धन से होगा सभी कुछ परिणाम मिल सकता है। किसी भी सभ्यता में

नई और सकारात्मक क्रांति को लाने के लिए जब कोई भी कदम उठाया जाता है तो उसके अच्छे परिणाम आने में समय अवश्य लगता है। देर हो सही हमें राजभाषा हिंदी के कार्यालयीन उपयोग के भी सुपरिणाम देखने को मिलेंगे। इसलिए हिंदी को भी हमें प्रेम, परिश्रम और प्रयास से उस सुंदर उपवन की तरह सींचना होगा जिसके फ्कूल हमारी लापरवाही के कारण मुरझा रहे हैं।

हिंदी की अमिट छाप प्रारंभिक काल से ही हमारे मन मस्तिष्क पर है और इस देश के जागरूक और निष्ठावान नागरिक होने के नाते हमारा कर्तव्य बनता है कि हम अपनी राजभाषा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को स्वीकार करें। हमारी भारतीय संस्कृति के सभ्यता और विकास की कहानी में हिंदी भाषा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अपरिहार्य रहा है। ऐसी आशा है कि हम सभी के अथक प्रयासों से एक दिन हमारी राजभाषा हिंदी प्रत्येक देशवासी के हृदय में भी राज करेगी और सही मायनों में राजभाषा बनेगी। हम सभी मिलकर संकल्प लें कि हम अपने आने वाले कल को एक उपहार देंगे जो हमारी प्यारी राजभाषा हिंदी भाषा का उपहार होगा।

हिंदी का फिर संचार होगा, राजभाषा का प्रचार होगा।
पा सकते हैं हम इस लक्ष्य को, यदि मन में दृढ़ विचार होगा।
पढ़ना लिखना और बोलना है, बस यही भाव मन में लाएं।
हिंदी का सिर ऊंचा रखना बच्चों को भी यह सिखलाएं।
जब करेंगे सब मिलकर प्रयास, तब लहू में नवसंचार होगा।
हिंदी फिर होगी शिखर पर, राजभाषा का उद्धार होगा ।

रविंद्र आर. कांबळे
क्षेत्रीय रेलवे प्रबंधक, रत्नागिरी

समय का सफर

वर्तमान शताब्दी से लोगों के पास समय की बहुत किद्धत होती जा रही है। लोगों के पास समय नहीं हैं, हर कोई जल्दबाजी में रहता है। अपने परिवार, दोस्तों या संबंधित के पास बैठने या उनके के पास जाने का समय नही है, परिवार में सभी सदस्य के सयुंक्त बैठने, आदर-सम्मान, संस्कार, समानता, भाईचारा, सयुंक्त खाना या बैठने जैसी परंपरा विलोपित होती जा रही है। इसीलिए आजकल परिवार में अनुशासन, आत्म-सम्मान व विवेक की कमी देखी जा सकती है। इसी कारण कभी भी अवांछित, अनियंत्रित, अचानक बेकाबू समस्या का सामना करना पड़ता है। ये सब इस बढ़ती हुई अतिरिक्त अग्रिम टैक्नोलॉजी, सामाजिक मीडिया है। जिससे लोगों शारीरिक, मानसिक, उदासी, खिन्नता एवं अवसाद से गिरे रहते है। अतः एक दिन यह टैक्नोलॉजी ही मानव जीवन के लिए काल बन कर आएगी। कहते है कि समय और ज्वार किसी का इंतजार नहीं करते बल्कि हमें इसका इंतजार करना होता है। यह ऊर्जा अनंत है क्योंकि समय अनिश्चित, अनियंत्रित व असंख्य है इस संपूर्ण जगत में समान गति से चलता जा रहा है। पृथ्वी पर समय का आकलन किया गया जिसमें इस दुनिया को घड़ी के रूप में समय सूचक मिला। समय दुनिया की सबसे बड़ी ताकतवर वस्तु है जिसे ना कोई खरीद सकता, ना ही रोक सकता। समय बड़े से बड़े ज्ञानी, अमीर-गरीब, वैज्ञानिक, रिसर्चर, मजदूर या अन्य कोई सबके लिए वहीं चौबीस घंटे है अब इन चौबीस घंटो को कैसे प्रयोग में लेना है यह इन पर निर्भर करता है इन चौबीस घंटों में ही कुछ लोग इतिहास रचे है और कुछ लोगो ने अपने जीवन की समस्याओं के भय से आत्मसमर्पण भी किए है।

कुछ लोग समय के मूल्य का अनुमान नहीं लगाते क्योंकि समय की परिभाषा उनके समझ नही आती है और समझदार लोग समय के प्रति अनुशासित एवं इमानदार होते है इसलिए समय का हमेशा पालन करना चाहिए क्योंकि समय दोबारा लौट कर नही आता है। समय का इतिहास लगभग 13.7 अरब साल पुराना है जिसमें बिग बैंग सिद्धांत द्वारा इस ब्रम्हांड का प्रारंभ देखा गया।समय जीवन की सबसे मूल्यवान एवं बलवान वस्तु है। अतः समय के अनुसार जिस तरह से चार युगों में से तीन युग समाप्त हो चुके जिनमें सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग एवं कलियुग है अतः माना जाता है कि सतयुग मे नरसिमा, मत्स्य, कुर्मा और त्रेता युग में भगवान श्री राम और द्वापर युग में। भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लिया था। माना जाता है कि जब-जब इन युगों में बुराइयों का प्रचार प्रसार हुआ है तब-तब भगवान विष्णु जी के अवतार में जन्म लिया और इन युगों का अंत किया। इस तरह से तीन युग समाप्त हो चुके है व अंतिम कलियुग चल रहा है जिसने बुराइयों को समाप्त करने के लिए भगवान विष्णु के दसवें अवतार कल्कि भगवान इस धरती पर जन्म लेंगे जिससे इस युग की बुराईयों के साथ यह युग भी समाप्त हो जाएगा। इन युगों में समय के अनुसार विभिन्न तरह के परिवर्तन देखे गए। वर्तमान कलियुग में भी प्रारंभ होने के बाद से विभिन्न तरह के परिवर्तन परिवर्तन देखे गए और आगे भी होते रहेंगे जिसके का जीवनकाल और लंबाई का कद धीरे-धीरे सिकुड़ता जा रहा है। वर्तमान समय में लोगों की औसत आयु कम होती जा रही है अतः आप समझ सकते है कि इस कलियुग का अंत निश्चित है और यह अंतिम पड़ाव की ओर अग्रसर है।

इस ब्रह्मांड पर मानव जीव को सभी तरीके की शक्ति प्रदान है, अर्थात बोलने, चलने, सुनने और समझने इत्यादि जानवर चल तो सकता है सुन भी सकता है लेकिन बोल नहीं सकता। इसी प्रकार पक्षी भी पूरा आसमान तो घूम लेता है लेकिन बोल नहीं सकते। मनुष्य के पास सबसे कीमती वस्तु उसका दिमाग है जिससे इस पृथ्वी पर अनेकों बदलाव देखे गए प्रमुखतः विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और दूरसंचार क्षेत्र में अतः इससे दुनिया में इंटरनेट और संधार संभव हो पाया है जो कि वर्तमान में मनुष्य जीवन के लिए लाभकारी सिद्ध हो रहे है परंतु इस विज्ञान की अग्रिम अनुसंधान जैसे आर्टिफिश्यल इंटेलिजेंस, रोबोट आदि मनुष्य जीवन के लिए हानिकारक भी साबित हो सकती है। मानव जीवन की शैली में काफी परिवर्तन देखे गए. जब से मानव ने अपना रूप बंदर से मानव के रूप में लिया है तब से मानव जीव ने विभिन्न आविष्कार किए जिसमें सर्वप्रथम आग का आविष्कार मानव आदिवासी जीवन से विज्ञान की तरफ धीरे-धीरे बढ़ रहा था। मानव का विज्ञान की तरफ बढ़ना विभिन्न तरह के आविष्कार मनुष्य जीव के लिए सुविधाओं को दर्शाता है क्योंकि विज्ञान से समय सूचक, तापमान सूचक मौसम और पृथ्वी पर आने वाले बड़े-बड़े सुनामी व तूफानों का आकलन करने में सफलता पाई है और यह विज्ञान की वजह से हो पाया है इस संसार में अनेको बड़े-बड़े वैज्ञानिक हुए जिन्होंने अपनी अपनी रिसई और अविष्कार से इस दुनिया को उपग्रह, प्रिंटिंग प्रेस, एनर्जी यंत्र, बल्ब, कंपास ऑटोमोबाइल, अंतरिक्ष विज्ञान, रेडियो एवं संचार, मेडिकल विज्ञान, विमान, जहाज, पनडुब्बी, जीव विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रासायनिक विज्ञान इत्यादि प्रधान किए इसी वजह से विज्ञान में क्रांति आ गई और तीव्रता से विकास हुआ।

वर्तमान में मनुष्य समय का मापन कर सकता है यह विज्ञान द्वारा संभव हो पाया है जिससे हम किसी भी साधन या व्यक्ति को ट्रैक कर सकते है और किसी बड़ी अनहोनी से बचा जा सकता है। कहते हैं कि इस ब्रह्मांड पर आने वाली सभी समस्याओं का निराकारण समय के अनुसार हो जाता है इसलिए मनुष्य जीवन के लिए समय सही साबित भी हुआ है। समय की वजह से जीवों के जीने का समय निर्धारण हो चुका है। हर कोई इस समय के अनुसार कार्य करता है। समय को देख कर ही अपने भविष्य की योजना बनाता है। इसलिए समय का सदुपयोग करना चाहिए, व्यर्थ गंवाना नहीं चाहिए। भविष्य में यह हमारे लिए अच्छा साबित होगा। समय मनुष्य का सबसे उपयोगी स्रोत है।

- राजेश पी जोशी
क्षेत्रीय राजभाषा अधिकारी एवं
क्षेत्रिय सहायक विद्युत अभियंता /रत्नागिरी

साइबर सुरक्षा (cyber security)

परिचय

साइबर सुरक्षा, विभिन्न हमलों, नुकसान या अनपेक्षित/ अनधिकृत उपयोग से नेटवर्क, सॉफ्टवेअर और डेटा की अखंडता की रक्षा करने के लिए व्यापक उपायोंकों संदर्भित करता है । इसका अहम हेतू साइबर स्पेस को सुरक्षीत रखना है ।

साइबर सुरक्षा की आवश्यकता

1. भारत मे इंटरनेट प्रयोगकर्ताओंकी संख्या लगातार बढ़ रही है , जिसके कारण साइबर सुरक्षा की बहूत ज्यादा जरूरत है। आजकल सब कुछ इंटरनेट और कम्प्युटर पर निर्भर है , जैसे की मनोरंजन, व्यापार, संचार , परिवहन, चिकित्सा, ख़रीदारी आदि यहाँ तक की बैंकिंग क्षेत्र भी ऑनलाइन हुआ है| बिना सुरक्षा योजना के हैकर आपके कम्प्युटर सिस्टम तक पहूंच सकते है और आपकी व्यक्तिगत जानकारी, आपके ग्राहक की जानकारी आदि और अन्य डाटा का दुरुपयोग कर सकते है।
2. साइबर सुरक्षा से आप सभी प्रकार की आर्थिक क्षति से बच सकते है।
3. आजकल सभी क्षेत्र मे, जैसे की बैंकिंग , ख़रीदारी, व्यापार , परिवहन आदि और अन्य ऑनलाइन लेंन देंन भी बढ़ रही है , जिसके कारण आपका कम्प्युटर सुरक्षित होना अनिवार्य है।

4. जैसे इंटरनेट प्रयोगकरता बढ़ रहे है, वैसे ही सुभेद्यता मे वृद्धि हो रही है और रोज नए साइबर अपराध दर्ज हो रहे है। इसमे अपेक्षाकृत अधिक जटिल एवं सवेदनशील साइबर खतरे जैसे के रैनसमवेयर भी सम्मिलित है।
5. सरकार द्वारा डिजिटलीकरण करने हेतू , आधार , MyGov , डीजीलॉकर, सरकारी ई-बाजार जैसे विविध पोर्टल तथा apps द्वारा नागरिकों , कंपनियों तथा सरकारी एजंसियोंकों ऑनलाइन व्यवहारों को अपनाने हेतू प्रोत्साहित किया जा रहा है।
6. सरकार , सैन्य ,कॉर्पोरेट , वित्तीय और चिकित्सा संगठन कम्प्युटर और अन्य उपकरणोंका उपयोग करके डाटा , प्रक्रिया और अन्य जानकारी संग्रह करते है। उसमे संवेदनशील जानकारी जैसे वित्तीय डाटा, व्यक्तिगत जानकारी, intellectual property हो सकती है जिसका अनधिकृत उपयोग नकारात्मक परिणाम दे सकता है।
7. इन सबकी सुरक्षा करना हमारे समाज को कार्यशील रखने के लिए आवश्यक है जिसके कारण साइबर सुरक्षा महत्वपूर्ण है।

साइबर सुरक्षा के प्रमुख तत्व

1. **सॉफ्टवेअर सुरक्षा** : कम्प्युटर सॉफ्टवेर एप्लिकेशन विकसित करते समय सभी चरणोंमे संबन्धित प्रक्रिया एवं क्रियाओं पर ध्यान देना जरूरी है । इससे ये सुनिश्चित होता है की सॉफ्टवेर सभी खतरो और भेद्यता से सुरक्षित है।
2. **इन्फॉर्मेशन सुरक्षा** : गोपनीयता को बनाए रखते हुए अवैध पहुंच या इन्फॉर्मेशन चोरी से इन्फॉर्मेशन की सुरक्षा को इन्फॉर्मेशन सुरक्षा कहा जाता है।
3. **नेटवर्क सुरक्षा** :यह नेटवर्क की उपयोगिता, स्थिरता, सत्यता और सुरक्षा सुनिश्चित करने की प्रक्रिया है।
4. **आपरेशनल सुरक्षा :**इसमें डेटा assets को संभालने और उनकी सुरक्षा के लिए प्रक्रियाएं और निर्णय शामिल हैं. किसी नेटवर्क तक पहुँचने के दौरान users की अनुमति और प्रक्रियाएँ निर्धारित करती हैं कि कैसे और कहाँ डेटा संग्रहीत या साझा किया जा सकता है।
5. **उपयोगकर्ता प्रशिक्षण** :सबसे आवश्यक और व्यवहार्य समाधान उपयोगकर्ता को प्रशिक्षित करना है। कई सुरक्षा घटनाएं केवल ज्ञान की कमी और सुरक्षा चिंताओं को महसूस किए बिना घटित होती हैं।
6. **विपदा पुनःप्राप्ति (डिसास्टर रिकवरी)** : व्यापार की सुरक्षा और नुकसान से बचने के लिए हर संगठन को उचित DR रणनीति विकसित करनी चाहिए| यह एक विकास प्रक्रिया है जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार के जोखिमों तक पहुँचने और विभिन्न प्राथमिकताओं को स्थापित करने और आपदा से उबरने के लिए रणनीति विकसित करने के लिए किया जाता है।

प्रौद्योगिकी पर हर दिन निर्भरता बढ़ रही है और इस निर्भरता ने इसे समझौता करने के लिए और अधिक कमजोर बना दिया है और इसके कारण साइबर हमले बढ़ रहे हैं |मुख्य समस्या साइबर सुरक्षा के नियमों के बारे में अनभिज्ञ होना है । इन सभी के कारण साइबर सुरक्षा आज के डिजिटल युग में एक चुनौती है ।

साइबर सुरक्षा द्वारा उपयोग किए जाने वाले सामान्य उपकरण

- पासवर्ड
- एंटिवाइरस सॉफ्टवेअर
- सॉफ्टवेअर पैच
- फायरवाल
- दो तरीकों से प्रमाणीकरण (Two factor authentication)
- एन्क्रिप्शन

साइबर सुरक्षा का महत्व

- उपयोगकर्ता की परिसंपत्ति विभिन्न साइबर सुरक्षा जोखिमों से सुरक्षित और बरकरार रखना।
- नेटवर्क, कंप्यूटर पर हमलों, क्षति और अधिकृत पहुंच से सुरक्षा सुनिश्चित करने का महत्व एक संगठन के दैनिक नियमित संचालन के बराबर है।
- आईटी में मौजूदा रुझानों को समझने और प्रभावी समाधान विकसित करने में मदद करना|
- सूचना और आईसीटी सिस्टम और नेटवर्क में भेद्यता को कम करना।

निजी साइबर सुरक्षा के लिए जरूरी बातें

- अपने सॉफ़्टवेयर और ऑपरेटिंग सिस्टम को अपडेट करें: इसका मतलब आप नवीनतम सुरक्षा update का लाभ उठाए।
- एंटी-वायरस सॉफ़्टवेयर का उपयोग करें: anti-virus software ,virus और खतरों का पता लगाने और हटाने में मदद करता है।
- मजबूत पासवर्ड का उपयोग करें: सुनिश्चित करें कि आपके पासवर्ड आसानी से अनुमान लगाने योग्य नहीं हैं और हर 3 महीने में उसे बदलते रहे।
- अज्ञात प्रेषकों या अपरिचित वेबसाइटों के ईमेल में लिंक पर क्लिक न करें: यह एक सामान्य तरीका है जिससे मालवेयर फैलता है।
- सार्वजनिक स्थानों पर असुरक्षित Wi-Fi network का उपयोग करने से बचें: असुरक्षित नेटवर्क आपको बीच-बीच में होने वाले हमलों के लिए असुरक्षित बनाता है।

सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र ,तेजी से आगे बढ़ रहा है। उचित सावधानियाँ रखनेसे हम साइबर स्पेस मे सुरक्षित रह सकते है । अधिकांश उपयोगकर्ता कंप्यूटर चालू करने के बाद के खत्रोंसे अंजान है, लेकिन उपयोगकर्ता से, कुछ बुनियादी ज्ञान और मेहनत के साथ, साइबर स्पेस मे काम करना सुरक्षित हो सकता है।

सुधा पंडित
क्षेत्रीय प्रबंधक (सू.प्रौ.)/रत्नागिरी

हिंदी की उत्पत्ति और विकास

भारत माँ के भाल पर सजी स्वर्णिम बिंदी,
है आपकी अपनी हिंदी।

हिंदी शब्द का सामान्य अर्थ है- हिंद का। इस अर्थ में हिंद देश में बोली जानी वाली किसी भी भाषा के लिए हिंदी शब्द का प्रयोग किया जा सकता है लेकिन भाषा शास्त्रीय दृष्टि से हिंदी भाषा से तात्पर्य है- खड़ी बोली से विकसित और नागरी लिपि में लिखी जाने वाली वह भाषा, जिसे भारत की राजभाषा होने का गौरव प्राप्त हुआ है। आइए अब देखते हैं हिंदी भाषा की उत्पत्ति और विकास:-

संसार का सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद है और इस ग्रंथ की भाषा है संस्कृत। ऋग्वेद लिखने से पहले भी संभव है कोई अन्य भाषा विद्यमान रही हो, परंतु आज तक उसका कोई लिखित रूप नहीं प्राप्त हो पाया। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि संभवतः आर्यों की सबसे प्राचीन भाषा ऋग्वेद की ही भाषा यानी वैदिक संस्कृत ही थी। विद्वानों का यह मत है कि ऋग्वेद की भी एक काल में अथवा एक स्थान पर रचना नहीं हुई है। इसके कुछ मंत्रों की रचना कंधार में, कुछ की सिंधु तट पर और कुछ मंत्रों की गंगा-यमुना के तट पर हुई है। इस अनुमान का आधार यह है कि इन मंत्रों में कहीं कंधार के राजा दिवोदास का वर्णन है, तो कहीं सिंधु नरेश सुदास का। इन दोनों राजाओं के शासन काल के बीच शताब्दियों का अंतर है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि ऋग्वेद की रचना सैकड़ों वर्षों के काल में जाकर पूर्ण हुई और बाद में इसे संहित-(संग्रह)-बद्ध किया गया। ऋग्वेद के उपरांत ब्राह्मण ग्रन्थों तथा सूत्र ग्रन्थों का सृजन हुआ है और इनकी भाषा ऋग्वेद की भाषा से कई अंशों में भिन्न है, जिसे लौकिक या क्लासिकल संस्कृत कहा जा सकता है। सूत्र ग्रन्थों के रचना काल में भाषा का साहित्यिक रूप व्याकरण के नियमों में आबद्ध हो गया था। तब यह भाषा संस्कृत कहलायी गई। तब वेद तथा लोक-भाषा (लौकिक) में पर्याप्त अंतर स्पष्ट रूप में प्रकट हुआ।

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा का मत है कि पतंजलि (पाणिनि की व्याकरण अष्टाध्यायी के महाभाष्यकार) के समय में व्याकरण शास्त्र जानने वाले विद्वान् ही केवल शुद्ध संस्कृत बोलते थे, अन्य लोग अशुद्ध संस्कृत बोलते थे तथा साधारण लोग स्वाभाविक बोली बोलते थे, जो कालान्तर में प्राकृत कहलायी गई। डॉ. चन्द्रबली पांडेय का मत है कि भाषा के इन दोनों वर्गों का श्रेष्टतम उदाहरण वाल्मीकि रामायण में मिलता है, जबकि अशोक वाटिका में पवन पुत्र हनुमान ने माता सीता से द्विजी (संस्कृत) भाषा में बात न करके मानुषी (प्राकृत) भाषा में बातचीत की। लेकिन डॉ. भोलानाथ तिवारी ने तत्कालीन भाषा को पश्चिमोत्तरी, मध्य देशी तथा पूर्वी नाम से अभिहित किया है। परंतु डॉ. रामविलास शर्मा आदि कुछ विद्वान्, प्राकृत को जनसाधारण की लोक-भाषा न मानकर उसे एक कृत्रिम साहित्यिक भाषा स्वीकार करते हैं। उनका मत है कि प्राकृत ने संस्कृत शब्दों को विकृत करने का नियमहीन प्रयत्न किया। डॉ. श्यामसुन्दर दास का मत है-

वेदकालीन कथित भाषा से ही संस्कृत उत्पन्न हुई और अनार्यों के संपर्क में आकार अन्य प्रान्तीय बोलियाँ विकसित हुईं। संस्कृत ने केवल चुने हुए प्रचुर प्रयुक्त, व्यवस्थित, व्यापक शब्दों से ही अपना भण्डार भरा, पर औरों ने वैदिक भाषा की प्रकृति स्वच्छान्दता को भरपेट अपनाया। यही उनके प्राकृत कहलाने का कारण है।

व्याकरण के विधि निषेध नियमों से संस्कारित भाषा शीघ्र ही सभ्य समाज की श्रेष्ठ भाषा हो गई तथा यही क्रम कई शताब्दियों तक जारी रहा। यद्यपि महात्मा बुद्ध के समय संस्कृत की गति कुछ शिथिल पड़ गई, परंतु गुप्तकाल में उसका विकास पुनः तीव्र गति से हुआ और दीर्घकाल तक संस्कृत ही राष्ट्रीय भाषा के रूप में सम्मानित रही। जनसाधारण अल्प शिक्षित वर्ग के लिए संस्कृत के नियमों का अनुसरण कठिन था, अतः वे लोकभाषा का ही प्रयोग करते थे। इसीलिए महावीर स्वामी ने जैन मत के तथा महात्मा बुद्ध ने बौद्ध मत के प्रसार के लिए लोकभाषा को ही अपनी वाणी का माध्यम बनाया। इससे लोकभाषा को ऐसी प्रतिष्ठा का पद प्राप्त हुआ, जो उससे पूर्व कभी प्राप्त नहीं हुआ था।

लोकभाषा को प्रतिष्ठा प्राप्त होने पर भी संस्कृत भाषा का महत्व कभी कम नहीं हुआ। नाटककार भास, कालिदास आदि के नाटकों में सुशिक्षित व्यक्ति तो संस्कृत बोलते हैं, परंतु अशिक्षित पात्र - विदूषक तथा दास-दासियाँ आदि प्राकृत में बात करते हैं। परंतु ये सब जिन प्रश्नों के उत्तर प्राकृत में देते हुए दिखाई गए हैं, उन प्रश्नों को संस्कृत में ही पूछा गया है। इससे स्पष्ट होता है कि जनसाधारण भी संस्कृत को अच्छी तरह समझ लेते थे, भले ही बोलने में उन्हें कठिनाई प्रतीत होती हो। पंचतंत्र में विष्णु शर्मा ने संस्कृत भाषा में ही राजकुमारों को शिक्षा प्रदान की थी। डॉ. आर. के. मुखर्जी ने कहा है, ब्राह्मण काल एवं उसके पश्चात् भी निःसन्देह संस्कृत सामान्य जनता के धार्मिक कृत्यों पारिवारिक संस्कारों तथा शिक्षा एवं विज्ञान की भाषा थी। सरदार के. एम. पणिक्कर ने कहा है संस्कृत विश्व की संस्कृति और सभ्यता की भाषा है जो भारत की सीमाओं के पार दूर-दूर तक फैली हुई थी।

<u>हिन्दी का निर्माण-काल:</u>

अपभ्रंश की समाप्ति और आधुनिक भारतीय भाषाओं के जन्मकाल के समय को संक्रांतिकाल कहा जा सकता है। हिन्दी का स्वरूप शौरसेनी और अर्धमागधी के अपभ्रंशों से विकसित हुआ है। 1000 ई. के आसपास इसकी स्वतंत्र सत्ता का परिचय मिलने लगा था, जब अपभ्रंश भाषाएँ साहित्यिक संदर्भों में प्रयोग में आ रही थीं। यही भाषाएँ बाद में विकसित होकर आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के रूप में अभिहित हुईं। अपभ्रंश का जो भी कथ्य रुप था-वही आधुनिक बोलियों में विकसित हुआ। अपभ्रंश के संबंध में देशी शब्द की भी बहुधा चर्चा की जाती है। वास्तव में देशी से देशी शब्द एवं देशी भाषा दोनों का बोध होता है। प्रश्न यह कि देशीय शब्द किस भाषा के थे? भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में उन शब्दों को देशी कहा है जो संस्कृत के तत्सम एवं तद्भव रूपोंसे भिन्न हैं। ये देशी शब्द जनभाषा के प्रचलित शब्द थे, जो स्वभावतया अप्रभंश में भी चले आए थे। जनभाषा व्याकरण के नियमों का अनुसरण नहीं करती, परंतु व्याकरण को जनभाषा की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना पड़ता है। प्राकृत-व्याकरणों ने संस्कृत के ढाँचे पर व्याकरण लिखे और संस्कृत को ही प्राकृत आदि की प्रकृति माना। अतः जो शब्द उनके नियमों की पकड़ में न आ सके, उनको देशी संज्ञा दी गई। प्राचीन काल से बोलचाल की भाषा को देशी भाषा अथवा भाषा कहा जाता रहा। पाणिनि के समय में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी। अतः पाणिनी ने इसको भाषा कहा है। पतंजलि के समय तक संस्कृत केवल शिष्ट समाज के व्यवहार की भाषा रह गई थी और प्राकृत ने बोलचाल की भाषा का स्थान ले लिया था।हिन्दी, भाषाई विविधता का एक ऐसा स्वरूप है, जिसने वर्तमान में अपनी व्यापकता में कितनी ही बोलियों और भाषाओं को सँजोया है। जिस तरह हमारी सभ्यता ने हजारों सावन और हजारों

पतझड़ देखें हैं, ठीक उसी तरह हिन्दी भी उस शिशु के समान है, जिसने अपनी माता के गर्भ में ही हर तरह के मौसम देखने शुरू कर दिए थे। हिन्दी की यह माता थी संस्कृत भाषा, जिसके अति क्लिष्ट स्परूप और अरबी, फारसी जैसी विदेशी और पाली, प्राकृत जैसी देशी भाषाओं के मिश्रण ने हिन्दी को अस्तित्व प्रदान किया। जिस शिशु को इतनी सारी भाषाएँ अपने प्रेम से सींचे उसके गठन की मजबूती का अंदाज लगाना बहुत मुश्किल है।

हमारी सभ्यता का हजारों साल पुराना सफर रहा है और इस सफर के बीच सातवीं शताब्दी (ई.पू.) से दसवीं शताब्दी (ई.पू) के दौरान संस्कृत भाषा के अपभ्रंश के रूप में उत्पन्न हिन्दी अभी अपनी माँ के गर्भ में ही थी। समय बदला, परिस्थितियाँ बदलीं। साथ ही बदलने लगी हमारी जरूरतें, हमारा रहन-सहन और हमारी भाषा। भाषा पर अगर गौर कर जिस दौरान पाली और पाकृत जैसी भाषाओं का प्रभाव उनके चरम पर था। यह वही समय था जब बौद्ध धर्म पूर्णतः परिपक्व हो चुका था और पाली व पाकृत जैसी आसान भाषाओं में इसका व्यापक प्रसार हो रहा था। देखा जाए तो पुरातन हिन्दी का अपभ्रंश के रूप में जन्म 400 ई. से 550 ई. में हुआ जब वल्लभी के शासक धारसेन ने अपने अभिलेख में अपभ्रंश साहित्य का वर्णन किया। हमारे पास प्राप्त प्रमाणों में 933 ई. की श्रावकचर नामक पुस्तक ही अपभ्रंश हिन्दी का पहला उदाहरण है। परंतु हिन्दी का वास्तविक जन्मदाता तो अमीर खुसरो जी ही थे। इन्होंने 1283 में खड़ी हिन्दी को जन्म देते हुए इस शिशु का नामकरण हिंदवी किया।

यह हिन्दी का जन्म मात्र एक भाषा का जन्म न होकर भारत के मध्यकालीन इतिहास का प्रारंभ भी है, जिसमें भारतीय संस्कृति के साथ अरबी व फारसी संस्कृतियों का अद्भुत संगम नजर आता है। तुर्कों और मुगलों केप्रभाव में पल्लवित होती हिन्दी को उनकी नफासत विरासत में मिली। वहीं दूसरी ओर इस समय भक्ति और आंदोलन भी काफी क्रियाशील हो चुके थे, जिन्होंने कबीर (1398-1518 ई.), रामानंद (1450 ई.), बनारसी दास (1601 ई.), तुलसीदास (1532-1623 ई.) जैसे प्रकांड विद्वानों को जन्म दिया। इन्होंने हिन्दी को अपभ्रंश, खड़ी और आधुनिक हिन्दी के अलंकारों से सुसज्जित करके हिन्दी का श्रृंगार किया। इस काल की एक और विशेषता यह भी थी कि इस काल में हिन्दी को अपनी छोटी बहन उर्दू मिली, जो अरबी, फारसी व हिन्दी के मिश्रण के रूप में अस्तित्व में आई। इस कड़ी में मुगल बादशाह शाहजहाँ (1645 ई.) के योगदानों ने उर्दू को उसका वास्तविक आकार प्रदान किया। भिन्न सभ्यताओं ने आकर हिन्दुस्तान पर शासन किया। इनकी सभ्यता और भाषाई विविधता ने ही हिन्दी का पालन-पोषण किया और एक अपभ्रंश शिशु व खड़ी बोली किशोरी को अपार अलंकारों से सुसज्जित कर आधुनिक हिन्दी रूपी युवती बनाया।

अंग्रेजी शासन तक यह अल्हड़ किशोरी शांत व गंभीर युवती के रूप में परिवर्तित हो चुकी थी। अँग्रेजियत के समावेश ने हिन्दी को तत्कालीन परिवेश में एक नया परिधान दिया। अब आधुनिक हिन्दी में तरह-तरह के प्रयोग अपने शीर्ष पर थे। किताबों, उपन्यासों, ग्रंथों, काव्यों के साथ-साथ हिन्दी राजनीतिक चेतना का माध्यम बन रही थी। 1826 ई. में उद्दंत मार्तण्ड नामक पहला हिन्दी का समाचार तत्कालीन बुद्धिजीवियों का प्रेरणा स्रोत बन चुका था। अब हिन्दी में आधुनिकता का पूर्णतः समावेश हो चुका था। अँग्रेजों के शासन ने जहाँ हिन्दी को आधुनिकता का जामा पहनाया, वहीं हिन्दी उनके विरोध और स्वतंत्र भारत के स्वप्न का भी प्रभावी माध्यम रही। तमाम हिन्दी समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं ने देश के बुद्धिजीवियों में स्वतंत्रता की लहर दौड़ाई। स्वतंत्र भारत के कर्णधारों ने जो स्वतंत्रता का स्वप्न देखा उसमें स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा के रूप हमेशा हिन्दी को ही देखा।

शायद यही वजह है कि स्वतंत्रता के उपरांत हिन्दी को 14 सितंबर,1949 को केंद्र की आधिकारिक भाषा (राजभाषा) का सम्मान मिला। वर्तमान में हिन्दी विश्व की सबसे अधिक प्रयोग में आने वाली भाषाओं में दूसरा स्थान रखती है। हो सकता है कि अँग्रेजी का प्रभाव इस प्रौढ़ा हिन्दी पर अधिक नजर आता हो, मगर इस हिन्दी ने अपने भीतर इतनी भाषाओं और बोलियों को समेटकर अपनी गंभीरता का ही परिचय दिया है। हो सकता है कि भविष्य में हिन्दी भी किसी अन्य अपभ्रंश शिशु को जन्म दे सकती है, लेकिन पूरे भारत को जोड़ने वाली , सभी राज्यों में एकता रखने वाली हिन्दी राजभाषा, संपर्कभाषा के रूप में बनी रहेगी और एक दिन राष्ट्रभाषा का गौरव भी प्राप्त कर लेगी।

एकता की है यह जान,
हिन्दी है देश की शान।
जय हिंद।

सदानंद चितळे
राजभाषा अधिकारी
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली समस्या एवं समाधान |

मानव जीवन में शिक्षा यह शब्द ही काफि महत् महत्त्वपूर्ण है। 'मानव जीवन में शिक्षा' का 'महत्त्व' मानव के आयुष्य एवं अपने कामयाबी के रास्तों को बदलने के लिए बड़ा मायने रखता है। शिक्षा लोगों के जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करना हर एक देश के नागरिक' का 'अधिकार है। शिक्षित व्यक्ति अच्छी शिक्षा के बलबूते पर अपने करियर का निर्माण करता है। बच्चों का सारा जीवन उन्हें अच्छा शिक्षा के से वजह खुशक मंगल होता है। हमारे देश के सरकार द्वारा शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए अपने स्तर पर काफि सारे महत्त्वपूर्ण बड़े-बड़े निर्णयले रही है। 'भारत' में शिक्षा का स्तर हर दिन बड़ रहा है। इसमें देश के साथ लोगों को शिक्षा मिलना और उनको सफलता मिलना यही 'उद्देश है। वर्तमान' स्थिती में कोरोना महामारी के वजह से दुनिया में सभि स्तरों पे कळावट' आयी है। इस बिच में शिक्षा क्षेत्र में भी कुछ बड़े बदलाव और नये तरिखें को अपनाया जा रहा है। इसमे देश में 'ऑनलाइन' शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण' और एक "नाविन्यपूर्ण कदम अपनाया जा रहा है। शिक्षा का यह नया उपक्रम का महत्त्व, उसकापरिणाम' और 'उपन्या' को जानना जरूरी है। उनका मानवी जीवन पर होने वाले सरोका 'अभ्यास करना जरूरी है।

"ऑनलाईन' शिक्षा यह एक ऐसा माध्यम है, जहाँ शिक्षक दूर से दुनिया के किसी भी इलाके से 'इंटरनेट के माध्यम से जुड़ सकता है। शिक्षक इकाइप 'झूम' इत्यादि ॲप के जरिए बच्चे से विडियो, ऑडीओ जरिए वार्तालाप करके उन्हें पढ़ा सकते है। इस माध्यम से बच्चे अपने मोबाइल, लॅपटॉप के जरिए अपने शिक्षक को देख और सुन सकते है। इनके द्वारा बच्चे अपने-अपने योग्यता के हिसाब से जरूरी शिक्षा हासिल कर सकते है। ऑन लाईन शिक्षा के वजह से बच्चों को कही जाना नहीं पड़ता और इससे यात्रा के समय की बचत हो जाती है। अपने सुविधाएँ के अनुसार अपने टाईम का योग्य नियोजन करके ऑनलाइन क्लालेस में हिस्सा ले सकते है। ऑनलाइन शिक्षा में बच्चे शिक्षक द्वारा ली गयी क्लास को रिकार्ड कर सकते है। जिससे कक्षा के पश्चात बच्चे रिकार्डिंग को पुनः सुन सकते है, और कही शंका हो तो उसका विवरण अगले म्जास मे पूछ सकते है। इससे सेकल्पना यानि कंसेप्ट बच्चे को समज आ जाती है। ऑनलाइन शिक्षा में किसी प्रकार की विषय संबंधित समस्या हो तो शिक्षक से ऑनलाइन पूछ सकते हैं। इसके लिए कही जाने की जरूरत नहीं। ऑनलाइन पढ़ाने के लिए शिक्षक कुछ कार्यक्रमों को प्लैश कार्ड और गेम जैसे बनाया जाता है, जो छात्र को सिखने के अनुभव और शिक्षा की रूची को बढ़ाता है। सिटिल सेवा परिक्षाएं, अभियांशिकी मेडिकल जैसी शिक्षा संस्था में नही, बाली ऑनलाइन हो रही है। इस पर परिस्थितीओं में यह "ऑनलाइन शिक्षा एक बेहतर विकल्प है। कोरोजा महामारी में यह कहना मुश्किल है की, कोरोना का परिणाम कब तक चलेगा और इन समि में सबको सामाजिक दूरी का पालन करना अनिवार्य है, इसिलिए वह ऑनलाइन शिक्षा का कदम बहुत महत्वपूर्ण साबित हो रहा है।

'लॉकडाउन' से इस वक्त जहाँ भी सभी शिक्षा केंद्र' बद है, 'वहा ऑनलाइन शिक्षा ने अपनी जगह बना ली है। आज दुनिया में | सारे देशों के बच्चे ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग करके आसानी से पढ़ाई कर पा रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षा करके लोग अपने कामभी कर सकते हैं।"ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्र गती की इंटरनेट', 'कनेक्टिविटी की जरूरत है। शिक्षक दुरस्थ शिक्षा में विडिओं, डीविडी और इंटरनेट के माध्यम से सिखाते हैं। इंटरनेट की सहजता के कारण वर्षो में आनलाइन शिक्षा लोकप्रिय हो रही है। आज की वर्तमान स्थिती में बच्चे स्कूल और कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे है, लेकिन ऑनलाइन शिक्षा ने रास्ता काफि

आसान कर दिया है। बच्चे निश्चिंत' टोकर घर में ही अपनी पढ़ाई पूरी कर पा रहे है। कुछ बच्चे दूर शिक्षकों के घर या कोचिंग संगठनो मे जाकर पढ़ाई पूरी तरह करते है और परिक्षा देकर ऑनलाइन शिक्षा देकर जीग्री हासिल करते हैं।आजकल जादातर'पोफेशनल कोर्सेस 'ऑनलाइन होती है, विदयार्थी ऑनलाइन पढ़ते है और ऑनलाइन परिक्षा देखर अपनी निश्चित डिग्री प्राप्त कर लेते है। ऑनलाइन' शिक्षा के माध्यम से हम सिर्फ भारत में ही नहीं बाल्क विदेशों में दी जाने वाली जरूरी शिक्षा हासिल कर लेते है।ऑनलाइन शिक्षा की वजह 'विद्यार्थियों' को कही जाना नहीं पड़ता और इससे यात्रा का समय,लागत की बचत भी हो जाती हैं।

"ऑनलाइन शिक्षा की तरफ लोग जादा पैमाने मे आक र्षित हो रहे हैं, क्युकि यह सुविधाजनक होने के संग, पैसे और समय बचाता है। कुछ बच्चें जो ग्रामिण परिवार एवमं क्षेत्रों से जुड़े है, जहाँ 'ऑनलाइन शिक्षा का प्रचलन नहीं है। उन क्षेत्रों गावोंगे ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करना बढ़ी समस्या मानी जाती है, उनके पास कंप्यूटर और इंटरनेट की सुविधा इत्यादि नहीं है, इस वजह से वहा ऑनलाइन शिक्षा पाने में बच्चे अ समर्थ है। हर परिवार" इंटरनेट का खर्चा नहीं उठा पाता है, इसलिए लॉकडाऊन जैसी परिस्थितियों में उन छात्रों को इस शिक्षा जैसे क्षेत्र में मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। ऑन लाईन शिक्षा में 'ट्यूशन 'करने से कुछ बच्चे बिगड जाते है। ऑनलाइन ट्यूशन बच्चों को ऑफलाइन 'व्युशन' के मुकाबले कम समय के लिए शिक्षा प्रदान करता है। सिर्फ एक तरफा अध्यापक बच्चों को पढ़ाता है, उसमें बच्चा जादा समय के लिए क्नास वर्क नहीं कर पाते हैं। ऑनलाइन शिक्षा" और "ऑफलाइन शिक्षा' बच्चे की विचार में बदलाव लाता है। मॉफलाइन शिक्षक बच्चे को नैतिक शिक्षा प्रधान करता है, जबकि ऑनलाइन शिक्षण में ऐसा नहीं हो पाता है। इस"ऑनलाइन शिक्षा को अच्छे नेटवर्क की आवश्यकता होती है। जहाँ अच्छा " नेटवर्क नहीं है वहा ऑनलाइन शिक्षा करना मुश्किल है। खासकर "ग्रामिण' "ग्रामिण क्षेत्रों में लोगों के पास तिव गती वाले इंटरनेट की सुविधा नहीं होती है। जब पहले बच्चें ऑफलाइन शिसा होते ये एवमं निजी खुशन के पास पढ़ते थे तब बच्चा एक अध्ययन साचे के मुताबिक, निश्चित अवधि के लिए पुस्तकों के साथ पढ़ते बैठता था। यह वर्षों तक चला आ रही परंपरा है। ऑनलाइन शिक्षा में इस तरह की ऐसी कोई भी विषेश विशेष सुचेि एवमं पढाई तैयार नहीं हुई है।ऑनलाइन क्ला सेस में इतने गंभिर रूप सा कोई अनुशासन नही होता है,जैसे की ऑफलाइन शिक्षा में बच्चे स्कूल में अनुशासित होते हैं। सामान्यतः एक शिक्षक कक्षा में आपको सिधे तरिकेते समज सकता है, कक्षा में अ पनी बोल चाल और आपकी प्रतिक्रिया देखकर समज सकता है. कि आप विषय को कितना समजपा रहे है।

'ऑनलाइन शिक्षा उन लोगों के लिए बाया विकल्प है, जो काम करते हुए या घर की देखभाल करने के साथ अपनी पढ़ाई जारी रखते हैं, अपान सुविधा के अनुसार वह ऑनलाइन शिक्षा" प्राप्त कर सकते है। यह एक नयी प्रकार की शिक्षा की परिभाषा है जो दुनिया में साम देश अपना रहे है। विद्यार्थिओं को जरूरत है कि, वह मन लगाकर पढ़े और अपना और अपने देश का भविष्य उज्ज्वल करे।"भारत सरकार द्वारा शिक्षा क्षेत्र में बहुत सारे उपक्रम योजनाओंका का अमल आजादी के बाद किया गया है, आगे भी इसका प्रसार और व्यापकता करने में अपना देश सक्राम है। इस तरहा"ऑनलाइन शिक्षा के इस नये रूप के प्रति भी देश का दायित्व बढ़ा होना चाहिए। जो बच्चे ऑनलाइन शिक्षा को पाने में असमर्थ है, उनके लिए निशुल्क ऑनलाइन शिक्षा निती उसकी व्यवस्था देश के हर एक क्षेत्र, विभाग एवं कोनों में इंटरनेट की उपलब्धता' ऐसी सारी नयी नितियों एवम उपक्रमोंका अमल होना जरुरी है, ताकि शिक्षा से कोई भी वंचित नारहे ऑनलाइन शिक्षा एक बढ़िया आध्यम टे जहाँ, छात्रों को अवश्य शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। टम बोलते हे की,पढ़ेगा इंडिया, ताभ तो बढ़ेगा इंडिया हारी तरहा सबको पढ़ना है। और अपने देश को आगे बढ़ाना है। शिक्षा का माध्यम किसी भी प्रकार का हो, यानि ऑफलाइन' एवं ऑनलाइन हो सभि को शिक्षा प्राप्त होना हमारी जिम्मेदारी है, उस तरहा उसको पाना, अपनाना उसकी भी निव समाज में रखना हमारा दायित्व है, और उसे हमे पूरा करना हमारा केत है। जिवन में शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण पदाव है, इसलिए कहता हुँ, ""शिक्षा का नहीं है कोई मोल, है जीवन' की भाँति अनमोल | जय हिंद।

स्वप्निल झगडे
कनिष्ठ अभियंता , चिपलून

महिलाओं के लिए सायबर सुरक्षा

आजकल महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराध एक जाना-पहचाना मुद्दा है। भारत में हर सेकंद, एक महिला साइबर क्राइम का शिकार बनती है और ऑनलाइन पोडियम अब एक नया मंच बन गया है , जहां हर पल एक महिला की निजता, गरिमा और सुरक्षा को चुनौती दी जा रही है। भारतीय महिलाएं साइबर अपराधों की तुरंत रिपोर्ट करने में सक्षम नहीं हैं क्योंकि उन्हें वास्तव में पता नहीं है कि ऐसे अपराधों की रिपोर्ट कहां करें या वे सामाजिक शर्मिंदगी के कारण इसकी रिपोर्ट करने के लिए गंभीर नहीं हैं, जिसका वे सामना नहीं करना चाहती हैं। अधिकांश समस्याओं का समाधान किया जा सकता है यदि महिलाएं अपराध की तुरंत रिपोर्ट करें और दुर्व्यवहार करने वाले को कड़ी कानूनी कार्रवाई करने की चेतावनी दें।

महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराध के प्रकार :

साइबर अपराधियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक , जो महिलाओं को बदनाम करने का लक्ष्य रखते हैं:

1. अश्लील ई-मेल, व्हाट्सएप मैसेज भेजना |
2. वेबसाइट, चैट रूम का इस्तेमाल कर महिलाओं का पीछा करना |
3. सहमति के बिना बनाया गया अश्लील वीडियो विकसित करना |
4. स्पूफिंग(Spoofing) ई-मेल और फिशिंग |
5. ऑनलाइन उपलब्ध विभिन्न सॉफ्टवेयरों का उपयोग करके अश्लील सामग्री के लिए छवियों का मॉर्फिंग |
6. ट्रोलिंग |
7. मानहानि |

अश्लील ई-मेल, वॉट्सऐप मैसेज भेजकर प्रताड़ना

ई-मेल के जरिए उत्पीड़न कोई नई अवधारणा नहीं है। यह पत्रों के माध्यम से परेशान करने जैसा ही है । उत्पीड़न में ब्लैकमेल करना, धमकी देना, धमकाना और यहां तक कि ईमेल के माध्यम से धोखा देना भी शामिल है। ई-उत्पीड़न पत्र उत्पीड़न के समान है लेकिन नकली आईडी से पोस्ट किए जाने पर अक्सर समस्या पैदा होती है।

वेबसाइटों, चैट रूम का उपयोग कर महिलाओं का पीछा करना - साइबर स्टाकिंग (Cyber Stalking)

साइबर स्टाकिंग की समस्या (Cyber Stalking) बढ़ रही है और महिलाएं सबसे अधिक संभावित लक्ष्य हैं। साइबरस्टॉकिंग ऑनलाइन उत्पीड़न और ऑनलाइन दुर्व्यवहार के लिए किसी का पीछा करने के लिए इंटरनेट का उपयोग करने का एक तरीका है। एक साइबर स्टॉकर किसी पीड़ित को प्रत्यक्ष शारीरिक धमकी में शामिल नहीं होता है, लेकिन जानकारी इकट्ठा करने के लिए पीड़ित की ऑनलाइन गतिविधि का अनुसरण करता है, मौखिक धमकी के विभिन्न रूपों में धमकी देता है।साइबर स्टाकिंग का उदाहरण ईमेल खातों के समूह से छेड़छाड़, धमकी या परेशान करने वाले ईमेल भेजना है |

सहमति के बिना बनाया गया अश्लील वीडियो विकसित करना -साइबर पोर्नोग्राफी (Cyber Pornography)

साइबर पोर्नोग्राफी(Cyber Pornography) ज्यादातर अश्लील सामग्री बनाने, प्रदर्शित करने, वितरित करने, आयात करने या प्रकाशित करने के लिए साइबरस्पेस का उपयोग करने का कार्य है। साइबर पोर्नोग्राफी ज्यादातर महिला नेटिज़न्स और बच्चों के लिए खतरा है।इसमें कंप्यूटर और इंटरनेट का उपयोग करके निर्मित अश्लील पत्रिकाएँ , अश्लील वेबसाइटें शामिल होती है।

स्पूफिंग ई-मेल और फिशिंग - (Spoofing & Phishing)

यह आम तौर पर एक ई-मेल को संदर्भित करता है जो एक स्रोत से निकलता है लेकिन ऐसा लगता है कि किसी दूसरे स्रोत से भेजा गया है। इससे धन (वित्तीय) क्षति हो सकती है। फ़िशिंग उपयोगकर्ता नाम और पासवर्ड जैसी संवेदनशील जानकारी और व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करता है।

मॉर्फिंग (Morphing)

मॉर्फिंग का अर्थ है अनधिकृत उपयोगकर्ता या नकली पहचान द्वारा मूल तस्वीर को संपादित करना। यह पता चला कि महिलाओं की तस्वीरों को फर्जी यूजर्स द्वारा डाउनलोड किया जाता है और एडिट करने के बाद फर्जी प्रोफाइल बनाकर अलग-अलग वेबसाइटों पर फिर से पोस्ट/अपलोड किया जाता है।

ट्रोलिंग (Troling)

ट्रोल इंटरनेट पर विवाद फैलाते हैं, अपराधी झगड़ना शुरू कर देते हैं या पीड़ितों को भावनात्मक, परेशान करने वाली प्रतिक्रिया के लिए उत्तेजित करने के इरादे से एक ऑनलाइन समुदाय में भड़काऊ या विषय से हटकर संदेश पोस्ट करते हैं। ट्रोल पेशेवर दुर्व्यवहार करने वाले होते हैं, जो सोशल मीडिया पर नकली आईडी का उपयोग करके साइबर स्पेस में शीत युद्ध का माहौल बनाते हैं और उन्हें ट्रेस करना भी आसान नहीं होता है।

मानहानि (Defamation)

साइबर मानहानि में वेबसाइट पर व्यक्ति के बारे में मानहानिकारक जानकारी प्रकाशित करना या पीड़ितों या संगठन के सामाजिक और मित्र मंडली के बीच प्रसारित करना शामिल है जो एक महिला की प्रतिष्ठा को उसकी गंभीर मानसिक पीड़ा और दर्द के कारण बर्बाद करने का एक आसान तरीका है।

सरकार द्वारा बनाया गया आईटी अधिनियम 2000 (IT ACT 2000)

1. साइबर मानहानि: धारा 67 और 72
2. मॉर्फिंग और ईमेल स्पूफिंग : सेक्शन 43 और 66
3. अश्लीलता : धारा 67(बी)
4. अन्य अपराध : धारा 65- कंप्यूटर सिस्टम को हैक करना

धारा 66 - ऐसी सूचना का प्रकाशन जो विद्युत रूप में अश्लील हो

धारा 67 - संरक्षित प्रणाली तक पहुंच

धारा 72 - गोपनीयता और निजता का हनन धारा

354 डी- यह धारा पीछा करने से संबंधित है

महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराध को रोकने के लिए प्रभावी उपाय करने और इन मुद्दों के बारे में समाज में जागरूकता पैदा करने के लिए गृह मंत्रालय द्वारा महिलाओं और बच्चों के खिलाफ साइबर अपराध रोकथाम (CCWC) के लिए एक योजना तैयार की गई है।

महिलाओं को साइबर क्राइम का शिकार होने से बचाने के कुछ उपाय

1. हमेशा मजबूत पासवर्ड का इस्तेमाल करें और पासवर्ड शेयर न करें ।
2. सोशल मिडीया पर हमेशा अनिवार्य से अधिक शेयर न करें ।
3. अकेले ऑनलाइन दोस्तों आदि से न मिलें ।
4. सोशल मिडीया पर सब कुछ प्रकाशित न करें ।
5. उन लोगों को ब्लॉक कर दें जिनके साथ आप इंटरैक्ट नहीं करना चाहते हैं।
6. साइबर क्राइम की रिपोर्ट करना यह बहुत जरूरी है । हर महिला बिना किसी झिझक के ऐसे साइबर क्राइम की रिपोर्ट करे ।
7. वेबसाइटों और सॉफ्टवेयर के गोपनीयता नीतियों पर ध्यान दें ।
8. व्यक्तिगत जानकारी चुराने के लिए उपयोग की जाने वाली वेबसाइटों से सावधान रहें।

निलेश वाडकर
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड
रत्नागिरी

इंटरनेट बना "सच्चा साथी"

प्रगति के पथ पर मानव बहुत ऊंचा पहुंच गया है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कई ऐसे मुकाम प्राप्त हो गये हैं जो हमें जीवन की सभी सुविधाएं, सभी आराम प्रदान करते हैं। आज संसार को मानव ने अपनी मुट्टी में समाया हुआ है। सबसे अधिक क्रांतिकारी कदम संचार क्षेत्र में उठाए गए हैं। अनेक नए स्रोत, नए साधन और नई सुविधाएं प्राप्त कर ली गई हैं जो हमें आधुनिकता के दौर में काफी ऊपर ले जाकर खड़ा करती है। ऐसे ही संचार साधनों में आज एक बड़ा ही सहज नाम है इंटरनेट।इसकी शुरूआत 1969 में एडवान्स्ड रिसर्च प्रोजेक्टस एजेंसिज द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका के चार विश्वविद्यालयों के कम्प्यूटरों की नेटवर्किंग करके की गई थी। इसका विकास मुख्य रूप से शिक्षा, शोध एवं सरकारी संस्थाओं के लिए किया गया था। इसके पीछे मुख्य उदेश्य था संचार माध्यमों को वैसी आपात स्थिति में भी बनाए रखना जब सारे माध्यम निष्फल हो जाएं। 1971 तक इस कम्पनी ने लगभग दो दर्जन कम्प्यूटरों को इस नेट से जोड़ दिया था। 1972 में शुरूआत हुई ई-मेल अर्थात् इलेक्ट्रोनिक मेल की जिसने संचार जगत में क्रांति ला दी।

धीरे-धीरे इंटरनेट के क्षेत्र में विकास हुआ। 1994 में नेटस्केप कम्प्यूनिकेशन और 1995 में माइक्रोसाफट के ब्राउजर बाजार में उपलब्ध हो गए जिससे इंटरनेट का प्रयोग काफी आसान हो गया। 1996 तक इंटरनेट की लोकप्रियता काफी बढ़ गई। लगभग 4.5 करोड़ लोगों ने इंटरनेट का प्रयोग शुरू कर दिया। ई-कॉम की अवधारण काफी तेजी से फैलती गई। संचार माध्यम के नए-नए रास्ते खुलते गए। नई-नई शब्दावलियां जैसे ई-मेल, वेबसाइट, वायरस आदि इसके अध्यायों में जुड़ते रहे। वर्ष 2000 में इंटरनेट इतनी बढ़ गई कि इसमें कई तरह की समस्याएं भी उठने लगीं। कई नए वायरस समय-समय पर दुनिया के लाखों कम्प्यूटरों को प्रभावित करते रहे। इन समस्याओं से जूझते हुए संचार का क्षेत्र आगे बढ़ता गया। भारत भी अपनी भागीदारी इन उपलब्धियों में जोडता रहा। आज भारत में इंटरनेट कनेक्शनों और प्रयोगकर्ताओं की संख्या लाखों में है।इंटरनेट आधुनिक और उच्च तकनीकी विज्ञान का एक महत्वपूर्ण आविष्कार है। ये किसी भी व्यक्ति को दुनियां के किसी भी कोने में बैठे हुए महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान करने की अद्भुत सुविधा प्रदान करता है। इसके माध्यम से हम लोग आसानी से किसी एक जगह रखे कम्प्यूटर को किसी भी एक या एक से अधिक कम्प्यूटर से जोड़कर जानकारी का आदान-प्रदान कर सकते है। इंटरनेट के द्वारा हम कुछ सेकेंडों में ही बड़े या छोटे संदेशों, अथवा किसी प्रकार की जानकारी एक कम्प्यूटर या डिजीटल डिवाइस (यंत्र) जैसे टैबलेट, मोबाइल, पीसी से दूसरे डिवाइस में काफी आसानी से भेज सकते है।

इंटरनेट के माध्यम से जीवन आसान हो गया है क्योंकि इसके द्वारा हम बिना घर के बाहर गये ही अपना बिल जमा करना, फिल्म देखना, व्यापारिक लेन-देन करना, सामान खरीदना आदि काम कर सकते है। अब ये हमारे जीवन का एक खास हिस्सा बन चुका है हम कह सकते है कि इसके बिना हमें अपने रोजमर्रा के जीवन में तमाम मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है।

इंटरनेट का उपयोग-

इसकी सुगमता और उपयोगिता की वजह से, ये हर जगह इस्तेमाल होता है जैसे- कार्यस्थल,

स्कूल, कॉलेज, बैंक, शिक्षण संस्थान, प्रशिक्षण केन्द्रों पर, दुकान, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, रेस्टोरेंट, मॉल और खास तौर से अपने घर पर हर एक सदस्यों के द्वारा अलग-अलग उद्देश्यों के लिये।इससे ऑनलाइन संपर्क तेज और आसान हो गया है जिससे संदेश या विडियो कॉनफ्रेंस के द्वारा दुनिया में कहीं भी मौजूद लोग एक-दूसरे से जुड़ सकते हैं। इसकी मदद से विद्यार्थी अपनी परीक्षा, प्रोजेक्ट तथा रचनात्मक कार्यों में भाग लेना आदि कर सकता है। इससे विद्यार्थी अपने शिक्षकों और दोस्तों से ऑनलाइन जुड़कर कई सारे विषयों पर चर्चा कर सकते है। इसकी सहायता से हम लोग विश्व की किसी प्रकार की भी जानकारी प्राप्त कर सकते है जैसे-कहीं की यात्रा के लिये उसका पता तथा सटीक दूरी आदि जान सकते है, वहां जाने के साधन आदि।

महामारी में इंटरनेट बना "सच्चा साथी"

कोरोना वायरस महामारी से जब दुनिया सिमट गई तो इंटरनेट की दुनिया ने हमारे लिए अवसर के नए-नए दरवाजे खोल दिए। हम इंटरनेट के साथ प्रयोग करते गए और हमारा समय पार होता गया।इस बात में कोई दो राय नहीं कि आज की इस सदी में इंटरनेट सबसे अहम चीजों में से एक है। इंटरनेट के बिना ऐसा लगता है कि जीवन में कुछ कमी सी है। जब पहली बार न्यूज एजेंसियों ने चीन के वुहान में संदिग्ध बीमारी की रिपोर्ट की, तो वह इंटरनेट ही था जिसके माध्यम से पूरी दुनिया में इस रहस्यमय बीमारी की चर्चा हुई। समय बीतने के साथ चीन से छन छन कर इस बीमारी के बारे में खबरें भी आने लगी। अखबार, टीवी और मैगजीन के बाद इससे जुड़ी जानकारी हमारे व्हाट्सऐप पर भी आने लगी। कुछ भ्रामक और कुछ गलत लेकिन कुछ खबरें असली भी थी।

इंटरनेट का सही इस्तेमाल करते हुए इस विषय पर दिलचस्पी रखने वालों ने और गहराई में जानना चाहा और इसके बारे में पढ़ा। समय गुजरता गया और इस रहस्यमय बीमारी का नाम पता चला, कोविड-19, इंटरनेट की मदद से ही दुनिया भर के अरबों लोग कंप्यूटर और अन्य डिवाइस के जरिए एक दूसरे से जुड़ते हैं। अमेरिका में रहने वाला कोई छात्र चेन्नई में अपने परिवार को वहां के हालात के बारे में बताता, तो मुंबई में टेक्सटाइल मिल में काम करने वाला प्रवासी श्रमिक अपने गांव में वहां के हालात के बारे में वीडियो कॉल कर जानकारी देता।कोरोना वायरस महामारी के समय में इंटरनेट पर जानकारी की बाढ़ आ गई। कुछ जानकारी तो प्रमाणित थी लेकिन कुछ तथ्य गलत भी थे। खासकर इम्युनिटी बढ़ाने को लेकर तरह-तरह के पोस्ट सोशल मीडिया और व्हाट्सऐप ग्रुप पर शेयर किए जाने लगे। गुड मॉर्निंग और प्रेरणादायक संदेश की जगह इम्युनिटी मजबूत करने के नुस्खे बताए जाने लगे।

जब लॉकडाउन हुआ तो सब कुछ ठप हो गया। लोग घर में रहते हुए अपने माता-पिता, भाई-बहन और रिश्तेदारों से वीडियो कॉल और चैटिंग के जरिए संपर्क बनाने लगे। स्मार्टफोन और इंटरनेट के कॉकटेल ने ऐसे लोगों की जिंदगी आसान की जो संकट के समय में परिवार से दूर थे और उन्हें भावनात्मक जुड़ाव की जरूरत थी, ऐसे में वीडियो कॉल कर माता-पिता या परिवार के अन्य सदस्यों से बात कर उनका मन हल्का हो जाता और वे अजनबी शहर में अकेला महसूस नहीं करते।कोरोना महामारी के दौरान इंटरनेट कई लोगों के लिए लाइफ़लाइन बन गया है। करोड़ों लोगों को घर से काम करने, मेडिकल सेवाएं लेने और एक दूसरे से जुड़े रहने का एकमात्र ज़रिया इंटरनेट ही रह गया। कोरोना वायरस ने इंटरनेट पर हमारी निर्भरता को उजागर तो किया ही है, इसे मानवाधिकार की तरह देखे जाने वाले अभियान को भी प्रोत्साहन दिया है।

दफ्तर का काम जो पहले दफ्तर से ही किया जाता था वह भी घर से करना मुमकिन हो पाया और छुट्टी या फिर दफ्तर का काम खत्म कर लोग घर पर ही मनोरंजन के लिए मनचाहा शो, फिल्म या फिर अन्य मनोरंजन की सामग्री देखने लगे। मोबाइल पर तो इंटरनेट जैसे किसी खजाने से कम नहीं। घर के किसी कोने या फिर बालकनी में बैठकर अपनी मनचाही फिल्म या वेब सीरीज देख सकते हैं। जो लोग खाना बनाने के शौकीन हैं, वो यूट्यूब के माध्यम से खाना बनाना भी सीख रहे हैं।

सिर्फ मनोरंजन ही क्यों, अन्य जरूरी सेवाओं के लिए इंटरनेट हमारे साथ एक सच्चे दोस्त की तरह

खड़ा है। फिर चाहे डॉक्टर से ऑनलाइन सलाह लेनी हो या अपनी मेडिकल रिपोर्ट देखनी हो। अब तो बीमारी से पीड़ित व्यक्ति भी अपनी तकलीफ दूर करने के लिए डॉक्टर से वीडियो कॉल के जरिए मदद कर सकते हैं। साथ में दफ्तर की बैठकें भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए कर रहे हैं। हालांकि लॉकडाउन के बाद इंटरनेट की स्पीड कम हुई है और डेटा की खपत बढ़ी है। इसे देखते हुए नेटफ्लिक्स और फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म ने वीडियो की क्वालिटी (गुणवत्ता) को थोड़ा कम किया है। देश में इंटरनेट इस्तेमाल करने वाली संख्या 48 करोड़ से ज्यादा है और जानलेवा कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए सरकार ने जब लोगों से घर में ही रहने को कहा तो इंटरनेट उनके लिए मसीहा बनकर सामने आया। एक ही शहर में रहने के बावजूद लोग एक दूसरे से नहीं मिल पा रहे हैं तो इंटरनेट उन्हें करीब लाया है। अगर इंटरनेट नहीं होता तो कई कंपनियों का कामकाज चरमरा जाता लेकिन वीडियो कॉल ने ऐसा होने नहीं दिया। बीते कुछ दिनों में लोगों ने अपने परिवार के सदस्यों, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ वीडियो चैट के स्क्रीन शॉट साझा किए हैं। इससे यह बात साबित होती है कि जब कोरोना वायरस को शिकस्त देने लिए सामाजिक दूरी का नियम अपनाया जा रहा है तब इंटरनेट लोगों को आपस में जोड़ रहा है। व्हाट्सएप, फेसटाइम, फेसबुक मेसेंजर जैसी ऐप के अलावा जूम जैसी नई ऐप भी लोगों का अपनी ओर ध्यान खींच रही हैं। मुंबई में एक एनजीओ के साथ काम करने वाली श्रुति मेनन के लिए भी इंटरनेट काफी मददगार साबित हुआ है। वह मार्च के पहले हफ्ते से ही वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अपने सहकर्मियों के साथ समन्वय कर रही हैं। कई अस्पताल ऑनलाइन परामर्श दे रहे हैं। डॉक्टर और मरीज के बीच वीडियो सत्र होते हैं। दवा का ई-पर्चा देते हैं और परामर्श शुरू होने से पहले फीस का भुगतान करना होता है। इसके अलावा लोग एक दूसरे के साथ ऑनलाइन गेम्स, खासकर लूडो भी खेल रहे हैं, जिसमें भाग लेने वाले लोग देश के किसी भी हिस्से के हो सकते हैं। 'सेलुलर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया' (सीओएआई) के महानिदेशक रंजन मैथ्यू ने बताया कि इंटरनेट पर निर्भरता बढ़ने से देश में डेटा की खपत में कम से कम 20-30 फीसदी का इजाफा हुआ है। इसे देखते हुए, नेटफ्लिस और फेसबुक जैसे प्लेटफार्म ने वीडियो क्वालिटी (गुणवत्ता) को कम किया है। इस बाबत सीओएआई ने सरकार को पत्र लिखकर आग्रह किया था कि नेटवर्क पर पड़ने वाले बोझ को कम करने के लिए उपाय किए जाएं। बेंगलुरु स्थित 'सेंटर फॉर इंटरनेट एंड सोसाइटी' के गुरशबद ग्रोवर का कहना है कि देश में इंटरनेट का तंत्र ऐसा नहीं है जो चरमरा जाए।

स्कूल की शिक्षा भी अब इंटरनेट के माध्यम से दी जा रही है और इसके लिए परिवार पर घर में लैपटॉप या फिर स्मार्टफोन खरीदने का दबाव है। कई लोग स्मार्टफोन तो खरीद लेते हैं लेकिन हर महीने इंटरनेट डाटा खरीदन पड़ता है। कोरोना काल से पहले अभिभावक इस खर्च से बच जाते थे। गांव और सुदूर इलाकों में इंटरनेट से जुड़ना अभी भी बड़ी चुनौती है।धारणा बन गई है कि स्कूलों के बंद रहने के बीच ऑनलाइन पढ़ाई एक अच्छा विकल्प बन गई है, लेकिन असल में ऑनलाइन शिक्षा का दायरा बेहद सीमित है।

निष्कर्ष -इससे ऑनलाइन संपर्क तेज और आसान हो गया है जिससे संदेश या विडियो कॉनप्रेंस के द्वारा दुनिया में कहीं भी मौजूद लोग एक-दूसरे से जुड़ सकते है। इसकी मदद से विद्यार्थी अपनी परीक्षा, प्रोजेक्ट, तथा रचनात्मक कार्यों में भी भाग ले सकते हैं। इससे विद्यार्थी अपने शिक्षकों और दोस्तों से ऑनलाइन जुड़कर कई सारे विषयों पर चर्चा कर सकते है। इंटरनेट की सहायता से हम लोग विश्व की किसी प्रकार की भी जानकारी मात्र चंद सेकेंडों में प्राप्त कर सकते है। वास्तव मे इंटरनेट ने मानव इतिहास में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का कार्य किया है।

- प्रिया पोकले

कनिष्ठ अनुवादक

वाचन संस्कृति

घंटों ऑनलाइन चैट करने वाले आज के युवा सोशल मीडिया के आदी हो चुके हैं। मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति उसका ज्ञान है और इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए पढ़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। इस प्रतिस्पर्धी युग में यदि कोई किसी भी क्षेत्र में जीवित रहना चाहता है, तो उस क्षेत्र में ज्ञान होना अनिवार्य है, तभी आप उस क्षेत्र में जीवित रह सकते हैं। हमारे पास एक लोकप्रिय कहावत है 'नॉलेज इज पावर'। 'वाचल, तब वाचल' अर्थात यदि आप पढ़ेंगे तभी आप प्रतियोगिता के युग में जी सकेंगे। पढ़ने का क्रेज होना चाहिए, तभी पढ़ने की संस्कृति विकसित होगी और इसका उपयोग एक बेहतर युवा पीढ़ी के निर्माण में होगा। ज्ञान की इस शक्ति से मनुष्य अपने विवेक को जोड़ता है और गहरा करता है और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वह अपनी कार्य संस्कृति को प्रभावित करता है।

हर क्षेत्र से शिकायत की जा रही है कि पिछली पीढ़ी की तुलना में वर्तमान पीढ़ी का पढ़ना कम है। स्वाभाविक रूप से मोबाइल, टीवी और सोशल मीडिया और आसपास के माहौल की वजह से अगर परिवार में पढ़ने का काम हो जाए तो बच्चों में पढ़ने के प्रति लगाव पैदा होगा। लेकिन अगर घर में विपरीत माहौल होगा तो बच्चों में पढ़ने की रुचि कैसे पैदा होगी? इसके लिए मुख्य रूप से माता-पिता को बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि पैदा करनी चाहिए। आपने कई बार सुना होगा कि पहले लोग सुबह चाय के साथ पेपर पढ़ते थे। उनका दिन अख़बार पढ़े बिना शुरू नहीं होता था; लेकिन अब समय के साथ स्थिति बदल गई है। पहले अखबार में समाचार पढ़ने से पढ़ने में रुचि पैदा होती थी। पठन-पाठन का जो 'छंद' था, उसका परिणाम यह हुआ कि हम अंततः रोडियो पर उसी अखबार से समाचार सुनने लगे। बाद में टीवी के उदय के साथ हम टीवी पर वही समाचार देखने लगे और अब सोशल मीडिया के कारण हम समाचार ऑनलाइन देखने लगे। यद्यपि हम विज्ञान की प्रगति के साथ आगे बढ़ गए हैं, हमने पढ़ने का आनंद खो दिया है। पढ़ने से जो आनंद मिलता है वह दुर्लभ होता है।

पढ़ने से कई लोगों का जीवन समृद्ध हुआ है। बहुत कम उम्र में केलुस्कर गुरुजी डॉ. भारत रत्न बाबासाहेब अम्बेडकर को 'बुद्ध चित्र' पुस्तक उपहार में दी गई थी। इस पुस्तक का प्रभाव यह हुआ कि डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर भारत के संविधान के निर्माता बने, जबकि महात्मा फुले थॉमस पेन की पुस्तक 'राइट्स ऑफ मैन' को पढ़कर प्रेरित हुए, इसलिए महात्मा फुले एक महान समाजसेवी बने। यह सब केवल और केवल पढ़ने के कारण ही संभव हो पाया। ऐसे अनेक उदाहरण हैं।पढ़ने की संस्कृति को बनाए रखने और हर इंसान के दिमाग को समृद्ध करने के लिए पढ़ने का प्यार बचपन से ही मन में डालना चाहिए। अगर हम युवाओं में पढ़ने का स्वाद पैदा करना चाहते हैं तो उनके आसपास ऐसी स्थिति पैदा करना जरूरी है, जितना ज्यादा आप पढ़ेंगे, उतना ज्यादा ज्ञान हासिल करेंगे। 'किताबें गुरु होती हैं' और किताबें पढ़ना से हमें निश्चित दिशा भी मिलती है, किताब दोस्त की तरह होती है। जैसे दोस्त हमें प्रभावित करते हैं, वैसे ही एक किताब हमें अलग-अलग तरीकों से प्रभावित कर सकती है। कहा जाता है कि किताब पढ़ने से मतिष्क में निखार आता है और ऐसा सिर किसी के सामने आसानी से नहीं झुकता। एक बार पढ़ने की आदत बन जाने के बाद व्यक्ति तनाव कम करने के लिए किताबों के साथ रहने लगता है। किताबें कमजोर दिमाग

को हिम्मत देती हैं। इसलिए निराशा में फंसा व्यक्ति आत्महत्या और हत्या करने से परहेज करता है। लेकिन आज पढ़ने के लिए कई बेहतरीन साधन उपलब्ध होने के बावजूद युवा पीढ़ी पढ़ने से दूर होती जा रही है। आज की तस्वीर यह है कि लोग ज्यादा से ज्यादा समय इंटरनेट पर बिता रहे हैं। न्यू मीडिया के आने से पढ़ने की संस्कृति लुप्त होती जा रही है। युवाओं में पढ़ने की रुचि विकसित करने और उन्हें पढ़ने के महत्व को समझाने के लिए विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से जन जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है।'व्यक्तित्व को बनाना है तो पढ़ना आवश्यक है' का संदेश कई महान लोगों ने दिया है। गहन चिंतन से ही संगठित समाज बनता है और गहन चिंतन की आदत अच्छे पढ़ने से ही बनती है।

पढ़ना एक जीवन वर्धक चीज है और यह बुद्धि का विकास करता है। पढ़ना मानव जीवन को फलने-फूलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी प्रकार जीवन की पूर्णता के लिए पढ़ना आवश्यक है। पढ़ना ही ज्ञान को लगातार बढ़ाने का एकमात्र तरीका है। आज पुस्तकालयों का स्थान इंटरनेट और ई-पुस्तकों ने ले लिया है। विद्यार्थी गर्मी की छुट्टियों में खेलने के साथ-साथ विभिन्न विषयों का अतिरिक्त पठन-पाठन भी करें। क्योंकि अतिरिक्त पढ़ने से मन बदल सकता है।पुस्तकों में समृद्ध विचार हमारे जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं और जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदलते हैं। पढ़ना हमारी शब्दावली को बढ़ाता है, अनुभवों के साथ-साथ विचारों और आशाओं को जगाता है, पढ़ने से जिज्ञासा बढ़ती है, रचनात्मकता बढ़ती है, करुणा, दूसरे की पीड़ा के प्रति जागरूकता और इसे समझने के लिए संवेदनशील मन की जरूरत होती है। हम महसूस करते हैं कि दूसरों के प्रति, समाज के प्रति हमारे कुछ कर्तव्य हैं। मन संकीर्ण, तुच्छ बातों में नहीं फँसता। पढ़ना मस्तिष्क को उत्तेजित करता है, नए शब्द उसे आगे बढ़ाते हैं, पढ़ने से न केवल नई जानकारी मिलती है बल्कि ज्ञान भी बढ़ता है। पढ़ना हमें दूसरों को सुनने का आदी बनाता है। सुनने के लिए धैर्य होना चाहिए। पढ़कर हम स्वतः ही धैर्य बनाए रखना सीख जाते हैं। सामान्य ज्ञान बढ़ता है, पढ़ने से हमें दोस्तों या लोगों के साथ व्यवहार करते समय किसी विषय पर चर्चा में अपनी बातों को ठीक से प्रस्तुत करने में मदद मिलती है। पढ़ने से हमें बहुत से लाभ मिल सकते हैं। यह मानसिक उत्तेजना प्राप्त करने में मदद करता है, मन पर तनाव कम करता है, एकाग्रता में सुधार करता है और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मन को केंद्रित करने में मदद करता है। पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय ए. पी। जे। अब्दुल कलाम के जन्मदिन को 'वचन प्रेरणा दिवस' के रूप में मनाते हुए हम पठन संस्कृति के प्रति जागरूकता फैला रहे हैं। युवाओं के मन में भी पुस्तकों के प्रति यह स्थायी प्रेम पैदा करने का प्रयास किया जाना चाहिए। माता-पिता, वास्तव में, परिवार के प्रत्येक सदस्य को घर में पढ़ने का माहौल बनाना चाहिए, ताकि बच्चों में कम उम्र से ही पढ़ने के प्रति प्रेम और स्वाद विकसित हो जाए। तभी वास्तविक अर्थों में पठन संस्कृति को विकसित करने में मदद मिलेगी।

सतीश एकनाथ धुरी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक,
मडगांव

राजभाषा पखवाडा

हिंदी दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय रेलवे प्रबंधक कार्यालय, रत्नागिरी में दिनांक 14 सितंबर 2022 से 29 सितंबर 2022 तक राजभाषा पखवाडा आयोजित किया गया।राजभाषा पखवाडे के दौरान आयोजित कार्यक्रमों का ब्यौरा निम्नानुसार है।

1. दिनांक 14.09.2022 को रत्नागिरी कार्यालय में राजभाषा पखवाडे संबंधी बैनर लगाया तथा कर्मचारियों को राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया।क्षेत्रीय रेल प्रबंधक, रत्नागिरी महोदय द्वारा गृह मंत्री जी और माननीय रेल मंत्री जी का हिंदी संदेश का प्रसारित किया गया। साथ ही कर्मियों को राजभाषा पखवाडे के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं से अवगत कराया और इसमें अधिक से अधिक मात्रा में सहभाग लेने हेतु अनुरोध किया। इस अवसर पर कुल 36 कर्मी उपस्थित थे।

2 दिनांक 15.09.2022 को रत्नागिरी क्षेत्रीय कार्यालय में ,कार्यालय में कंम्प्युटरों लैपटॉप में हिंदी यूनिकोड फॉट तथा MICROSOFT INDIC LANGUAGE INPUT TOOL एवं वाईस टाइपिंग के इस्तेमाल संबंधी प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर कुल 36 कर्मी उपस्थित थे।

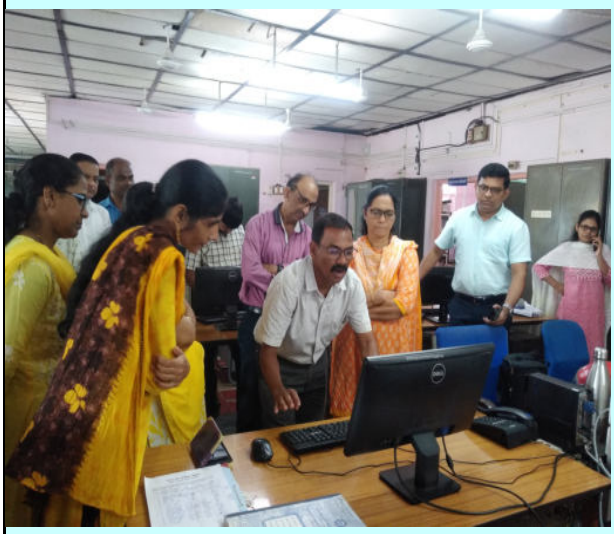

3.दिनांक 16.09.2022 को 15.00 बजे रत्नागिरी कार्यालय में प्रथम चरण की हिंदी निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में 11 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

4. दिनांक 19.09.2022 को 15:00 बजे रत्नागिरी कार्यालय में प्रथम चरण की हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

5. दिनांक 20.09.2022 को 15:00 बजे रत्नागिरी कार्यालय सभागृह में प्रथम चरण की हिंदी कथाओं पर वाक् प्रतियोगिता आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में 9 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

6. दिनांक 29.09.2022 को 15:00 बजे रत्नागिरी क्षेत्रीय कार्यालय सभागृह में हिंदी प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।इस प्रतियोगिता के अवसर पर कुल 39 कर्मी उपस्थित थे।

क्षेत्रीय रेल प्रबंधक कार्यालय रत्नागिरी में राजभाषा पखवाड़े के अवसर पर रत्नागिरी क्षेत्र में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सभी अधिकारी तथा कर्मचारियों ने बहुत उत्साह से भाग लेकर हिंदी के प्रति अपने स्नेह को व्यक्त किया । इसप्रकार राजभाषा पखवाडे का आयोजन सफलता पूर्वक किया गया ।

कागज की कश्तिया...

बीत गए वह .....दिन सुहाने,
बन गई .....एक कहानी ।
वह कागज की, कश्ती और ,
बारिश का ....पानी ।।

आज भी गुजरता हूं..... . जब ,
उन बीती हुई. .... राहों से ।
एक कतरा बनकर बूंद, बारिश की,
बरस जाती है .....आंखों से ।।

वो बनाकर कागज के,... अखबार से,
रंग बिरंगी सी..... कश्तियां ।
जब चलती थी वो, बारिश के पानी में ,
मन करता था खूब .....मस्तियां ।।

वह लड़ना झगड़ना..... बेमतलब का ,
तब दिल में मतलब कहां, हुआ करता था ।
खूब कर के .....मौज मस्ती ,
हर बालक..... बचपन जिया करता था ।

भीगने का एक अलग,आनंद हुआ करता था ,
तब घरों में कहां बच्चा... बंद हुआ करता था ।
खुली हवा में ,लेता था..... खूब सांसे ,
बीमार शायद कोई,चंद हुआ .....करता था ।।

आज सुबह से लेकर ,शाम..... बरस जाती है,
बारिश की बूंदे कश्तियों के लिए. तरस जाती है ।
आज वह बचपन, वो बचपन वाली ...बात कहां ,
आज की .....नन्ही पीढ़ी ,
कश्तियों का मतलब .....कहां समझ पाती है ।।

- राजेश पी जोशी
क्षेत्रीय राजभाषा अधिकारी एवं
क्षेत्रिय सहायक विद्युत अभियंता /रत्नागिरी

राजभाषा विभाग,1976 के नियम 8(4) के अनुपालन में विनिर्दिष्ट किए गए विषय (उपक्रमों के लिए)

'क' तथा 'ख' क्षेत्र की राज्य सरकारों या संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासन और इन क्षेत्रों में स्थित केंद्रिय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों आदि और गैर-सरकारी व्यक्तियों को जाने वाले सभी पत्रादि हिंदी में भेजना।

- हिंदी में प्राप्त सभी पत्रादी के उत्तर हिंदी में ही देना।
- किसी कर्मचारी द्वारा हिंदी में दिए गए या हस्ताक्षर किए गए आवेदन,अपील या अभ्यावेदन का उत्तर हिंदी में देना।
- 'क' तथा 'ख' क्षेत्र से अंग्रेजीमें प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में देना।
- राजभाषा कानुन की धारा 3(3)के अंतर्गत आने वाले प्रलेख अनिवार्य रुप से व्दिभाषी रुप में जारी करना।
- मानक मसौदों के माध्यम सें भेजे जाने वाले पत्र हिंदी में जारी करना।
- अग्रिम के लिए आवेदन पत्र ।
- रजिस्टर और सेवा पुस्तिकाओं के शिर्षक और प्रविष्टियां हिदी में करना।
- हात से लिखे जाने वाले नोट।
- उपस्थिति पंजिका में नामयऔर हस्ताक्षर।
- दौरा कार्यक्रम।
- टी.ए./डी.ए. बिल।
- अधिनस्थ कार्यालयों के निरीक्षण नोट में राजभाषा का उल्लेख।
- 'क' तथा 'ख' क्षेत्र को भेजे जाने वाले निफाफों पर पते हिंदी में लिखना।
- वर्ग 'ग' और 'घ' के रेल कर्मचारीयें की सेवा पुस्तिकाओं में इंतराज।
- नियुक्ति पत्र।
- पदोन्नति मामले।
- वरीयता सूची।
- निपटारा एंव पेंशन संबंधी कार्य।
- वर्ग ग और घ के कर्मचारियों के संदर्भ में अनुशासन और अपील संबंध मामले।
- मस्टर शीट एवं वेतल बिल।
- नक्शो, ड्राइंग, चार्टो के शीर्षक।
- ऑडीट रजिस्टर एवं संबधित रिपोर्ट।
- निरीक्षण कार्यो के सभी रजिस्टर रिपोर्ट।
- विभागिय बैठकों में हिंदी में चर्चा।
- शीर्ष बैठकों की कार्य सूची, कार्यवृत्त द्विभाषी जारी करना।
- प्रथम सूचना रिपोर्ट, चालान,रोचनामा हिंची में बनाना।
- कार्यलयाल कागजात पर हिंदी में हस्ताक्षर करना।
- द्विभाषी कंप्यूटरों पर हिजी में किए जाने वाले कार्य-
    1. पी.सी.डी.ओ./एम.सी.डी.ओ
    2. वेतन पर्चियां
    3. सामान्य पत्राचार
    4. प्रोफार्मा
    5. लिरीक्षण रिपोर्ट

****

रेल गाड़ियों के परिचालन में लोको पायलट और ट्रैन मैनेजर की भूमिका

रात के 11 बज रहे हे,रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर बड़ी संख्या में यात्री बेसब्री से अपनी ट्रैन के आने का इंतजार कर रहे हे, उन सब का इंतजार समाप्त होता हे और उनकी ट्रैन रत के 11.30 बजे प्लेटफार्म पर आती हे. और सभी जाने वाले यात्री अपने अपने डब्बो में चढ़ जाते हे जिन यात्रियों की शायिकायें आरक्षित होती हे वह अपनी अपनी शायिकावो पर जा कर सो जाते हे और बिना आरक्षित टिकिट वाले यात्री साधारण बोगी में जा कर बैठ जाते हे । रेल गाड़ी में सोये और बैठे हुवे यात्री निश्चिन्त होते हे और उन सभी को यह भरोसा होता हे की सुबह जब भी उनकी नींद खुलेगी तब वह सभी अपने अपने स्टेशन पर सुरक्षित पहुंच चुके होंगे । कई यात्री गाड़ी में सोने से पहले अपने परिजनों को फोन कर के यह बताते हे की कल सुबह घर पर पहुंच रहा हूँ। और कई यात्री रेल गाड़ी में चढ़ने के बाद दूसरी सुबह अपने घर पहुंचने के बाद क्या क्या करना हे यह भी सोच रहे होते हे।

उपरोक्त सभी बांते यह सिद्ध करती हे की सभी लोगों को रेलवे द्वारा सफर करने पर और रेलवे पर पूरा विश्वास हे।उनके इसी भरोसे और विश्वास को कायम रखने के लिए रेलवे का प्रत्येक कर्मचारी अपने अपने कार्य को संरक्षा पूर्वक और पूरी लगन से करता हे। जिसमे रेल गाड़ी के लोको पायलट और ट्रैन मैनेजर एक अहम भूमिका निभाते हे। अपनी पहली ड्यूटी के पश्चात 16 घंटो की विश्रांति के बाद वह अगली ड्यूटी करते हे। गाड़ी आने के 30 मिनट पहले ,वह तीनों स्टेशन की लॉबी में रिपोर्ट करते हे जहा सबसे पहले उन तीनो का परीक्षण किया जाता हे की उन में से कोई किसी भी प्रकार के नशे का सेवन करके न आया हो यह होने के बाद वह रेल गाड़ी की संरक्षा के लिए आए हुवे निर्देशों का अध्ययन करते हे और स्टेशन मास्टर द्वारा दिए गए सतर्कता आदेश, जो की उनको जिस खंड में अपनी गाडी चलानी हे उसमे अभियांत्रिकी विभाग द्वारा अलग अलग किलोमीटर पर कार्य के लिए लगाए गए गति प्रतिबन्ध लिखे होते हे जिसको लोको पायलट और ट्रैन मैनेजर अपने पास रख लेते हे। रेल गाड़ी आने के बाद लोको पायलट लोको में और ट्रैन मैनेजर गाड़ी के पीछे अपनी निर्धारित बोगी में जाते हे उसके बाद लोको पायलट गाड़ी के लोको की जाँच करते हे और ट्रैन मैनेजर से यह सुनिश्चित करते हे की उनकी रेल गाड़ी में किसी भी प्रकार की कोई खराबी न हो जब तक स्टेशन मास्टर उनकी ट्रैन को प्रस्थान के लिए हरा सिग्नल नहीं देता तब तक वह अपनी ट्रैन को आगे नहीं बढ़ाते और जैसे ही उनको हरा सिग्नल मिलता हे तब लोको पायलट लोको का हॉर्न बजाता हे ,ताकि उनकी ट्रैन के यात्रियों को यह जानकारी मिले की उनकी ट्रैन स्टेशन से छूटने को तैयार हे, और ट्रैन मैनेजर से हरे सिग्नल का आदान प्रदान करके यह सुनिश्चित करते हे की सभी यात्री ट्रैन में चढ़ गए हो और उसके बाद वह अपनी ट्रैन को आगे बढ़ाते हे। और अब जब सभी यात्री गाड़ी में आराम से सो रहे या बैठे हुवे हे,तब लोको पायलट और ट्रैन मैनेजर अपनी आँखों की नींद को दरकिनार कर पूरी सजगता से गाड़ी को चलाते हे।

कई बार लोग यह भी सोचते हे की लोको पायलट को कुछ अधिक कार्य नहीं होता क्योकि गाड़ी तो अपनी पटरी पर ही चलेगी और सड़क की तरह सामने या पीछे से दूसरी गाड़ी तो आएगी नहीं, परन्तु लोगो का यह सोचना सही नहीं हे क्योकि लोको पायलट और ट्रैन मैनेजर को गाड़ी चलाने के अलावा भी कई सरे कार्य गाड़ी चलाते समय करना होते हे जो गाड़ी की सुरक्षा के लिए होते हे, इसलिए वह पूरी तरह से सजग होते हे और किसी भी विषम परिस्थिति में गाड़ी को रोकने के लिए और दुर्घटना को बचाने के लिए हमेशा तैयार रहते हे। गाड़ी को अधिकतम गति 110/120 किमी/प्रति घंटे पर चलाते हुवे, खंड में पटरी पर कार्य के लिए लगाए हुवे 20/30/50.या 75 गति के सतर्कता आदेश जहा गाड़ी दि गयी गति से ही चलना चाहिए और लोको पायलट अपनी गाड़ी को दिए गए किलोमीटर पर सतर्कता आदेश में दी गयी निर्धारित गति पर ही चलाता हे ताकि कोई भी दर्घटना न हो, अगले स्टेशन पर पहुंचने से पहले उसकी

गाड़ी को दिए गए सिग्नल को ध्यान से देखता हे और उसी के अनुसार गाड़ी को रोकता या चलाता हेL पटरी पर अचानक कुछ भी अवरोध जैसे पेड़ का गिरना,मिटटी या बड़े बड़े पत्थर का पटरी पर आ जाना, की दशा में गाड़ी के इमरर्जेन्सी ब्रेक का उपयोग करके गाड़ी को रोकता हे, और गाड़ी को दुर्घटना से बचाता हे। किसी स्टेशन पर सामने से आने वाली गाड़ी को यदि पहले सिग्नल दिया हो तो यह अपने लाल सिग्नल पर रुक जाता हे और जब तक सिग्नल पीला या हरा नहीं होता वह अपनी गाड़ी को आगे नहीं बढ़ाता। उनकी ड्यूटी के दौरान पूरी रात में लोको पायलट 20 से 30 स्टेशन को पास करता हे और जिन जिन स्टेशनो के मध्य सतर्कता आदेश हे उनका पालन कर के ही गाड़ी को चलाता हे। प्रत्येक स्टेशन के स्टेशन मास्टर के साथ लोको पायलट और ट्रैन मैनेजर हरे सिग्नल का आदान- प्रदान करके यह सुनिश्चित करते हे की उनकी गाड़ी सुरक्षित दशा में चल रही हे। उनको मालूम होता हे की उनकी गाड़ी का कोन कोन से स्टेशन पर ठहराव हे और वह अपनी गाड़ी को उन सभी स्टेशन पर रोकते भी हे। लेकिन यह जरुरी नहीं की उनकी गाड़ी को निर्धारित स्टेशन पर ही रोका जाये उसके आलावा यदि किसी गाड़ी को पास करना हे या अग्रता देना हे तो भी स्टेशन मास्टर इनकी गाड़ी को स्टेशन पर रोक सकता हे इसलिए इनको हमेशा सजग रहना पड़ता हे और सामने के सिग्नलों को देख कर ही अपनी गाड़ी को चलाना होता हे। यह सभी बांते यह साबित करती हे की रेलवे लोको पायलट और ट्रैन मैनेजर का कार्य कितना कठिन होता हे।

जिस की हम सभी जानते हे की त्योहारों के समय,सर्दियों और गर्मियों की छुटियो के दौरान आरक्षित टिकिट नहीं मिल पाती,इसलिए रेलवे स्पेशल गाड़ियों का परिचालन करती हे ताकि लोगो की यात्रा सुखद हो सके। लेकिन स्पेशल गाड़ियों के परिचालन का कार्य भी इन्ही लोको पायलट और ट्रैन मैनेजर के कंधो पर आ जाता हे और उस दौरान जब सभी अपने अपने त्योहारों को अपने परिवार के साथ ख़ुशी और आनंद के साथ मानते हे तब यह लोगो की खुसी के लिए अपनी निर्धारित गाड़ियों के साथ साथ स्पेशल गाड़ियों का भी परिचालन करते हे। रक्षाबंधन में इनकी बहन घर पर इंतजार करती रहती हे और यह यात्रियों की कलाई पर बंधी हुई राखी देख कर खुश होते हे की मेरे एके हाथ पर राखी नहीं बंधी तो क्या हुआ पर मरे कारन के भाइयों की कलाई पर बहनो ने राखी तो बंधी हे यह होते हे हमारे लोको पायलट और ट्रैन मैनेजर जो दुसरो की खुसी में अपनी खुशियों को कुर्बान कर देते हे। तेज बारिश हो या तेज गर्मी या ठंडी यह हमेशा अपनी ड्यूटी पूरी दक्षता के साथ करते हे।

गडियो का परिचालन करके देश की अर्थ व्यवस्था को मजबूत करते हे व्यापारियों के मॉल को काम से काम समय में और सुरक्षित उनके गंतव्य तक पहुंचने का कार्य करते हे >ऐसे होते हे हमारे रेलवे के लोको पायलट और ट्रैन मैनेजर जो विषम परिस्थितियों में भी अपने कार्य को करते हे अपने कार्य के प्रति अपने देश के प्रति और अपने यात्रियों के प्रति समर्पित भावना से कार्य करते हे ठीक उसी तरह जिस तरह देश की सेना के जवान होते हे अपने परिवार को छोड़ कर अपनी ड्यूटी को हमेशा प्राथमिकता देते हे। हम सभी को रेलवे के लोको पायलट और ट्रेन मैनेजर के साथ साथ रेलवे के सभी कर्मचारियों पर गर्व होना चाहिए की वह सब मिल कर हमारी यात्रा को सुखद बनाना के लिए अपनी खुशियों का त्याग कर देते हे।

भूपेंद्र ए कोवे
(स्टेशन अधीक्षक)
रत्नागिरी

जीवन में सफलता का रहस्य

शहर के एक प्रसिद्ध कॉलेज का आज वार्षिक समारोह था। कॉलेज में बहुत से विद्वानों को बुलाया गया था ।कॉलेज के सभी छात्र वार्षिक समारोह में आए हुए थे ।वार्षिक समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध प्रेरक वक्ता को बुलाया गया था। समारोह के दौरान बहुत से ज्यादा प्रेरक वक्ता से तरह-तरह के प्रश्न पूछ रहे थे तथा प्रेरक वक्ता इन प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे तथा प्रेरक वक्ता उनके प्रश्नों के प्रभावशाली और कारगर उत्तर दे रहे थे।

कुछ समय बाद प्रेरक वक्ता बोले मैं आपको कुछ देना चाहता हूं जिसे करके आप अपने जीवन में कुछ अच्छा सीख सकेंगे ।क्या आप तैयार हैं ? सभी छात्रों ने एक साथ उत्तर दिया,"हाँ ! हम तैयार है!!"

प्रेरक वक्ता बोले, "मैं आपको यह सीखाना चाहता हूँ कि आजकल अधिकतर लोग कठिन मेहनत करने ,लगन और योग्य होने के बाद भी असफल क्यों हो जाते हैं? तभी प्रेरक वक्ता ने प्रत्येक छात्र को पांच प्रश्न-पत्र दिए जिसमे से प्रत्येक पर 10-10 प्रश्न लिखे हुए थे।प्रेरक वक्ता बोले,'आपके पास 10 मिनट है इसी समय मे आपको इन प्रश्नों के उत्तर को लिखना है।

प्रेरक वक्ता के ओके कहते हीसमय शुरु हो जाता है।

समय की तुलना में प्रश्न अधिक होने के बाद भी छात्र प्रश्नों को हल करने लगते हैं ।10 मिनट बाद सभी छात्रों से प्रश्न-पत्र ले लिए जाते हैं।

अब प्रेरक वक्ता ने छात्रों से पूछा "आपमें से कितने ऐसे छात्र हैं जिन्होंने 5 में से कम से कम एक प्रश्न पत्र के सभी प्रश्नों के उत्तर दिए हैं।"

बहुत ही कम छात्रों ने अपना हाथ उठाकर एस(yes)! कहा।

फिर प्रेरक वक्ता बोले,जिन छात्रों ने पांच प्रश्न पत्रों में से कम से कम एक प्रश्न-पत्र के सभी प्रश्नों के उत्तर दिए हैं वह सभी उत्तीर्ण हैं और जिन्होंने किसी भी एक प्रश्न-पत्र के सभी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया है,वह सभी अनुत्तीर्ण माने जायेंगे।

अब सभी छात्र एक दूसरे के चहरों को देखने लगे क्योकि उन्हें यह बात और इससे मिली सीख जीवन मे आपके सामने जो अवसर होते है,वह इन्ही प्रश्न-पत्रों की तरह होते है यानि आपको जीवन में इन प्रश्न पत्रों की तरह बहुत से अवसर मिलते है।

कहानी में बताया गया एक प्रश्न-पत्र एक अवसर के समान है,जो व्यक्ति किसी एक प्रश्न-पत्र को समय रहते पूरा हल कर लेते हैं,वह एक मंजिल पर पहुंचर सफलता प्राप्त करतें है और जो प्रश्न तो बहुत सारे हल करते हैं लेकिन प्रश्न-पत्रों के बदलने (अवसर बदलने) के कारण किसी एक को भी पूरा हल नहीं कर पाते हैं,वह असफल हो जाते हैं।

ऐसा नहीं है कि इस तरह असफल होने वाले लोग मेहनत नहीं करते या ऐसे लोगों में लगन की कमी और योग्यता की कोई कमी होती है।

इतना कुछ होने के बाद भी इस प्रकार असफल हुए लोगों में धैर्य की बहुत कमी मिलती है,उनका खुद में कम विश्वास साफ़ दिखता है।

अधिकतर लोग एक अवसर को अपनाकर सफलता के रास्ते की ओर चल देते हैं लेकिन यदि रास्ते में कोई परेशानी आती हैं या किसी दूसरे के कहने पर अब दूसरा अवसर तलाशने लगते हैं।
दूसरे अवसर के मिल जाने पर अब वह सफलता पाने के लिए दूसरे रास्ते पर चलने लगते हैं ।अगर सफलता के इस रास्ते में कोईं परेशानी आती है या फिर किसी और अच्छे अवसर को देखकर फिर से वह अवसर और रास्ता बदलकर तीसरे अवसर और रास्ते को अपनाकर उसकी ओर चल देते हैं।
उनका यही चलते रहता है और अंत मे वह असफल हो जाते हैं।
जबकि बहुत कम ऐसे भी लोग होते हैं जो जीवन में मिलने वाले सीमित समय को देखकर अपनी इच्छा के किसी एक अवसर या रास्ते को अपनाकर अपनी सफलता के रास्ते पर चल देते हैं।रास्ते में आयीं परेशानियाँ को हल करते हुए आगे बढ़ते जाते हैं।
वह किसी दूसरे के कहने पर या परेशानियों से घबराकर अपना रास्ता खो नहीं देते ।
दोस्तों! यही सफलता का रहस्य है।जिंदगी में समय सीमित है।यदि सफल होना है तो अपने दिल की आवाज सुनते हुए अपनी पसंद का एक अवसर या रास्ता चुन लीजिए और एक अवसर पर चलने का निर्णय लेकर अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़िए।
यदि सफलता के रास्ते में कठिनाइयां आती है तो रस्ता बदलने का बहाना मत बनाइए बल्कि कठिनाइयों को हल करते हुए मंजिल की ओर बढ़ जाइए।

अपने कार्य को पसंद करते हुए सफलता की आशा की किरण को जलाए रखिए।स्वयं में विश्वास रखिए और एक विजेताओं की तरह सफलता को प्राप्त कर लिजिए।

मंजिल उन्ही को मिलती है जिनके सपनो में जान होती है,
पंखो से कुछ नहीं होता हौसलों से ही उड़ान होती है!!

श्रेया काकडे
वरिष्ठ लिपिक,राजभाषा विभाग
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

ऑनलाईन कारोबार

इक्कीसवीं सदी का यह युग संगणक युग के रूप में जाना जाता है। आज के युग मे सभी व्यवहार ऑनलाइन होते हैं। इंटरनेट हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। इंटरनेट के बगैर जीवन की कल्पना मात्र असहनीय प्रतीत होती है। इंटरनेट ने हमारे जीवन स्तर को बेहद खुशहाल और बेहतर बनाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। इसके माध्यम से कई सुविधाओं का लाभ केवल लैपटॉप या फोन के माध्यम से हम उठा सकते है।

ऑनलाइन खरीदारी, रेल, प्लेन या बस का टिकिट जैसे कई काम हम हर जगह घंटों कतार में खड़े रहकर और समय की बर्बादी कर करते थे, अब इंटरनेट की सुविधा से मिनटों में करते हैं। इंटरनेट के माध्यम से कोविड 19 कार्य आपातकाल में शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण कार्य ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से करने की वजह से छात्रों का सुनहरा भविष्य हम सुरक्षित रखने से कुछ प्रतिशत ही सही, पर सफल है। कल्पना कीजिये की अगर इंटरनेट ना होता तो शिक्षा का भविष्य, छात्रों का भविष्य कितना असुरक्षित हो जाता है। यदि हम मार्केट स्थिती की ओर नजर डाले तो लगभग 80% दुकानदार कोई भी उत्पाद को खरीदने से पहले सेवा लेने से पहले ऑनलाइन सर्च करते हैं। बड़े शहरों के ग्राहक ही नहीं, ग्रामीण क्षेत्र के ग्राहक भी बिना सर्च के कोई भी खरीदारी नहीं करते। इसमें सभी उम्र के लोग शामिल हैं।यही कारण है कि किसी भी कंपनी या बिजनेस के लिये डिजिटल मार्केटिंग अति महत्वपूर्ण हो रही है। ऐसे में सवाल उठता है कि डिजिटल मार्केटिंग क्या है?

डिजिटल मार्केटिंग यह एक ऐसा माध्यम है जिस के द्वारा हम किसी भी उत्पाद या सेवा को ऑनलाइन प्रमोट कर बेच या खरीद सकते है। इस समय लोग बहुत अधिक मात्रा में ऑनलाइन सर्च करते हैं, चाहे कोई वस्तु या सेवा खरीदनी चाहे मनपसंद के ब्रांड हो कपड़े हो या केक, रसोई में युक्त सामग्री हो या किराणासामग्री, सब्जीयाँ हो या घर में युक्त टी. व्ही, फ्रीज या वाशिंग मशीन जैसे जरूरत ही हर वस्तु हेल्थ मशीन्स हो या दवाई सभी चीजे देख परखकर शोध करके ही ली जाती है।

अधिकतर सेवाओं को डिजिटल माध्यम से ही पाने का प्रयास किया जाता है। जन्म से लेकर शादी और मेडिकल सुविधा से जीवन के अंत तक सफर पूर्ण करने की बिक्री और खरीदारी डिजिटल माध्यम से की जाती है। अपनी सेवाओं और उत्पादों को डिजिटल स्रोत के माध्यम से ऑनलाइन बेचना ही डिजिटल मार्केटिंग है, जिसमें इंटरनेट की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। ऑनलाइन तरीका नये ग्राहकों तक पहुँचने का सबसे प्रभावी माध्यम, सबसे सस्ता माध्यम है। 1980 में डिजिटल मार्केटिंग की शुरुआत हुई पर कामयाब न हो पाई। 10 वर्ष के बाद यानी 1990 में फिर पहल ही गई और आज कामयाबी का सफर डिजिटल मार्केटिंग ने तय किया है। चाहे अकेला व्यापारी हो या गृह उद्योग चलाने वाला छोटा उद्योगपति, बड़ा उद्योगपति हो, अभी तो इंटरनेशनल उद्योगपति को भी अपनी सेवा को कम अवधी में अधिक से अधिक सही ग्राहकों के पास पहुंचाने में डिजिटल मार्केटिंग ने आसान किया है। हमारे जीवन में डिजिटल मार्केटिंग का महत्व क्या है? यह सवाल जरूर उत्पन्न होता है। इस आधुनिक संगणक युग में बने रहने के लिए हमें नये तौर तरीके अपनाना, नये तंत्रज्ञान को आत्मसात करने की आवश्यकता है। परिवर्तन सृष्टि का नियम है। जो परिवर्तनशील रहा वही टिका रहा। समय का पहिया अपनी रफ्तार को कम नहीं करता और आज लोगों के पास समय भी कम है। अपने स्नेही जनों से मिलने का समय निकालना है, तो खरीदारी भी दुकान में जाकर करना कष्टप्राय होता है। ऐसे में डिजिटल मार्केटिंग बहुत सुकून देती है। डिजिटल •मार्केटिंग और ऑनलाइन मार्केटिंग सोशल नेटवर्किंग साइटस के द्वारा किसी भी व्यक्ति को

सक्षम बनाता है। इसी वजह से अधिकसुविधा, प्रभावी लागत और समय को देखते हुये डिजिटल मार्केटिंग का उपयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। डिजिटल (मार्केटिंग व्यवसायी और ग्राहक दोनों को अत्यधिक सुविधा के साथ काम करने के लिए सक्षम बनाता है। लोग अपनी व्यवसाय के उत्पादों को सेवा की बिक्री को बिना बाजार में जाए भी बढ़ा सकते है। कुछ भी गूगल करो और पाओ, जो आप पाना चाहते है। संक्षिप्त में यही है डिजिटल मार्केटिंग जो आपका समय बचाना है, पैसा बचाता है। प्रभावपूर्णता बढ़ाता है। योग्य परिणाम देता है और बेचने तथा खरीदारी मनपसंद होने का समाधान भी देता है। तभी तो हम कह सकते है कि डिजिटल मार्केटिंग ही एकमात्र ऐसा स्रोत है, जिसके माध्यम से बेहतर परिणाम, कम खर्च और कम समय में लाये जा सकते है।वर्तमान और भविष्य में डिजिटल मार्केटिंग हमने पिछले कई सालों में बहुत से बदलाव देखे है। एक वक्त था जब सेवा या वस्तु विनिमय के माध्यम से बिकती थी। सेवा के बदले सेवा या वस्तु के बदल वस्तु या सेवा जब आज सेवा या वस्तु इंटरनेट की सुविधा और डिजिटल मार्केटिंग की उपलब्धता से हम जो चाहे सेवा, जो चाहे वस्तु जब चाहे पा सकते हैं।

इंटरनेट ने दुनिया में रह रहे लोगों को एक दूसरे से जुड़ने का अदभूत मंच प्रदान किया है। जो कि पहले बस सपना ही था। पर यह सपना इंटरनेट ने सच कर दिखाया है। इंटरनेट ही एक ऐसा माध्यम है जिसकी वजह से विक्रेता एवं उपभोक्ता, ग्राहको के मध्य उत्तम वार्तालाप से सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है। डिजिटल मार्केटिंग की प्रभावशीलता उत्पादों और सेवाओं की बिक्री के रूप में दिखती है। पहले निर्मित उत्पादन काफी समय तक गोदामों में पड़े रहते थे और सह भी जाते थे क्योंकि उनकी बिक्री में लंबा समय व्यतीत होता था। निर्मित उत्पादनों का विज्ञापन ऑफलाइन किया जाता था जो बहुत महंगा साबित होता था और सभी लोगों तक पहुंचने में भी काफी समय लगता था। इन दिनों में गूगल, फेसबुक, इंस्टाग्राम वॉट्स ॲप यू ट्यूव तथा अन्य मार्केटिंग एप के कारण उत्पाद ज्यादा से ज्यादा लोगों तक कम से कम समय में पहुंचता है। ऑनलाइन वितरण के कारण उत्पाद को सही लोगों तक पहुँचाना तथा भुगतान भी ऑनलाइन किया जा सकता है।

मूल्य वापस, सुविधाजनक प्रतिस्थापना, वापसी नीति केसाथ उत्पादन की विश्वसनीयता भी बढ़ती है और बेचना और खरीदना और भी आसान हो जाता है। डिजिटल मार्केटिंग के लिए एक बात बहुत ही कारागर है। जो दिखता वही बिकता है। लोग इन दिनों इतने ज्यादा जागरुक है कि कोई भी व्यापारी ठग नहीं सकता क्यों कि उसे भी उपभोक्ता मंच का भूत डराता है। इसलिए गलत जानकरी देना अब आसान नहीं है। सायबर नीति की सहायता से सच्चे झूठे प्रोफाईल पर रोक लगा सकता है। आने वाले समय में भी व्यवसाय सेवा ऑनलाइन है। दृश्यता तथा दक्षता पर आधारित रहेगा। नूतनीकरण, तंत्रज्ञान और आधुनिकीकरण की वजह से लोगों को सही समय पर सही जानकारी मिलना आम है।

डिजिटल मार्केटिंग के विविध पहलू -

कोई भी डिजिटल मार्केटिंग इंटरनेट सुविधा के बिना मुमकिन नहीं है. इसलिए इसे इंटरनेट मार्केटिंग भी कहा जाता है। डिजिटल मार्केटिंग के विविध पहलू है, सारांश में तकनीकी तथा गैर तकनीकि गतिविधियों का निचोड़ इस तरह है।

1) **सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन (एसईओ):-** यह एक ऐसा प्रौद्योगिकीय स्त्रोत है जिसमें वेबसाइट को सर्च इंजन के द्वारा सही की वर्ड का उपयोग करते हुये ऑप्टिमाइज किया जाता है। एसईओ बहुत सारी ऑन पेज और ऑफ पेज गतिविधियों का जोड़ है जो वेबसाइट को सर्च इंजन फर्स्ट पेज पर लाने में मदद करता है। इसका काम वेबसाइट की संपूर्ण अभिनय को बढ़ाने में मदद करना है।

2) **सोशल मिडिया ऑप्टिमाइजेशन (एसएमओ):-** सोशल मीडिया ऐसा एकमात्र स्रोत है जिसके माध्यम से बहुतायत में लोगों से फेसबुक, लिंक्ड इन, ट्विटर, प्रिंटरेस्ट और ऐसे बहुत से साईटस द्वारा जुड़े रहने का मौका मिलता है। ये सारी साईट्स अब व्यवसाय की सफलता एवं मार्केटिंग के लिए उपयुक्त है।

विज्ञापनदाता अपनेअपने व्यवसाय के उत्पादनों और सेवाओं को आकर्षक विज्ञापनों की सहायता से प्रचार करते हैं। उपयोगकर्ती को कुछ समय पश्चात ये विज्ञापन दिखते हैं। कम लागत में अधिक लोगों तक पहुँचने का यह आसान तरीका है।

3) **ई मेल मार्केटिंग :-** इसका कार्य कंपनी के उत्पादों की जानकारी अपने मेल के इनबॉक्स में पाना है। जब भी कोई कंपनी अपने नये उत्पाद या सेवा को प्रारंभ करती है, या कोई नया ऑफर निकालती हैं, वो ये सारी जानकारी ग्राहकों को मेल द्वारा पहुँचाना उचित समझती हैं क्यों कि इससे कम समय में काफी लोगों तक पहुँचना आसान होता है।

4) **वीडियो प्रचार :-** अगर हम वीडियो द्वारा प्रचार की बात करे तो यू ट्यूब एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा उत्पादों और सेवाओं का अच्छी तरह प्रचार किया जा सकता है। यू ट्यूब पर विज्ञापन दिखाने से या यू ट्यूब पर प्रचार करने से दर्शको तथा ग्राहकों को उत्पादों और सेवाओं खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया। जा सकता है।

5) **पे-पर क्लिक :-** (पीपीसी) ऑर्गेनिक परिणाम में थोड़ा सा वक्त लगता है, पर पीपीसी एक ऐसा स्रोत है जिसके द्वारा कोई भी मार्केटर हर क्लिक के भुगतान पर तुरंत एक व्यावसायिक लीड ले सकता है। ये मापांक हर क्लिक पर कुछ भूगतान ले लेता है। इसके द्वारा आये व्यवसाय को मापना आसान है। शुरुआती व्यापारी इस सेवा का ही उपयोग करते है, ताकि तुरंत लीड मिल सके और व्यापार भी विकसित हो।

6) **ऑनलाईन रेप्युटेशन मैनेजमेंट:**- (ओआरएम) वेबसाईट को बनाना और इसे ऊपर स्थिति में लाना ही काफी नहीं है। संपूर्ण सकारात्ताक, ऑनलाईन दृश्यता भी होना जरूरी है। एक नकारात्मक समीक्षा या प्रतिक्रिया वेबसाइट के स्तर को गिरा सकती है। इसलिए ओआरएम की सेवाओं की जानकारी भी होना जरूरी है। क्योंकि ये सकारात्मक रूप से व्यवसाय को ब्रांड बनाने में सहायता करती है।

7) **एप्प मार्केटिंग (एएम):-** एप ही एकमात्र ऐसा स्रोत है जिसके द्वारा आप किसी के भी मोबाइल फोन में काफी लंबे समय तक रहसकते है। आप एप का उपयोग दिन ब दिन बढ़ रहा है कोई कंपनी समूह हो जाती है तब वह अपना एप बनावाती है और उसके द्वारा ही व्यवसाय का प्रचार करती है और व्यवसाय भी करती है। जैसे अमेजान, फ्लीपकार्ट, पेटीएम ऑनलाइन मार्केटिंग इस युग में सबसे अधिक प्रभावशाली है, पर कुछ खामियाँ भी है। जो भी आप ऑनलाइन करे, आशा करनी चाहिए कि हम नैतिकता के रास्ते पर ही चले ताकि लंबे समय तक भरोसा बनाया जा सके । उपभोक्ता ने भी अपने सद्सद्विवेक बुद्धी का ज्ञान रखकर ही खरीदारी करे। हरेक ऑनलाइन व्यावसायिक का नैतिक फर्ज है। कि विश्वसनीयता बनाये रखे जिससे ग्राहक उसका विज्ञापन देखते ही उत्पाद खरीदें।

संतोष वामन पाटोळे
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड़

धन्यवाद